

ਖਾੰਡ 2

# ਕਾਇਵਾਂ—ਏ—ਗੁਣਜ਼ਲ

ਸੁਰੇਸ਼ ਚਨਦ ਚਤੁਰਵੰਦੀ

**કારવાઁ—એ—ગુજરાત**

# बस इतना ही

मंग ख्वाहिश है कि आने वाले वक्तों में गुज़लों का ये कारवाँ यूँ ही चलता रहे।  
मेरे वच्चे सचिन, अमित, चंद्रिका, शुभा, अर्पिता, प्रकाश, देवयानी, देविका,  
शिउली, नलिन और अनुश्री इसके साथ भले न चलें, पर उन्हें इसके मुसलसल  
चलते रहने का एहसास बना रहे। उर्दू जुबान की खुशबू उनकी ज़िंदगी से कभी  
आँझल न हो।

एस.सी. चतुर्वेदी

# कारवाँ—ए—गुज़ल

## (भाग - दो)

संग्रह कर्ता

सुरेश चन्द्र चतुर्वेदी

नमन प्रकाशन  
नई दिल्ली - 110002

© सुरेश चन्द्र चतुर्वेदी

पहला संस्करण : 2016

ISBN : 978-81-8129-645-0

ISBN 81-8129-645-1



## नमन प्रकाशन

4231/1, अंसारी रोड, दरियागंज,  
नई दिल्ली-110002

फोन: 23247003, 23254306

श्री नितिन गर्ग द्वारा नमन प्रकाशन के लिए प्रकाशित तथा  
एशियन ऑफसेट प्रिंटर्स, मौजपुर, शाहदरा, दिल्ली में मुद्रित।

---

**karwan-E-Gazal**

By

**Suresh Chandra Chaturvedi**

## कुछ अपनी बात

कुछ रुकता, ठिठकता-सा ग़ज़लों का ये कारवाँ आज अपने पहले पड़ाव पर आन पहुँचा है। 2-3 साल के इस वक्फे के वजूहात रहे। ऐसा है कि हम हिंदुस्तानी इतिहास बनाना तो पसंद करते हैं, पर उसे सिलसिले वार तवारीख में सहेजने में कोताही कर जाते हैं। कई ऐसी हस्तियाँ, जिनके नाम और काम से हम वाक़िफ थे, उनकी ज़िंदगी के दूसरे अहम पहलुओं को खोजना नामुमकिन-सा हो गया। इसी कारण कारवाँ-ए-ग़ज़ल में कई उस्ताद शुअरा हज़रात को शामिल नहीं कर पाया। मैं उनसे माज़रत की उम्मीद रखता हूँ। जनाब बिस्मिल रतलामी और जनाब सहर अफ़ग़ानी से रतलाम में घर की नशिस्तों में मुलाक़ातें होती रहीं। पर उनके बारे में दीगर-जानकारी नहीं मिल पाई। अगर किसी पाठक के पास ऐसी जानकारी हो तो मेहरबानी कर मुझसे साझा करिए, मैं एहसान मानूँगा।

तो ‘कारवाँ-ए-ग़ज़ल’ अपनी राह चलता इस मुकाम पर आ पहुँचा है और आपके पेशे नज़र है। कारवाँ तो चलता ही रहेगा, मैं कितनी दूर इस कारवाँ के साथ चल पाता हूँ, यही देखना है। आप सबकी मुहब्बत और खुलूस का तलबग़ार हूँ, वो जैसी अब तक हासिल हुई, उम्मीद हैं मजीद भी मिलती रहेगी। दुआ कीजिए ये कारवाँ चलता रहे और शुअरा हज़रात की दिलचस्प जानकारी इकट्ठा कर आपकी खिदमत में पेश कर सकूँ।

“ख्वाहिश तो है कारवाँ के साथ चलने की  
देखना ये कि रास्ते कब तलक साथ देते हैं।”

—एस.सी. चतुर्वेदी

संपर्क : 102/68, सिल्वर ओक्स  
डी.एल.एफ.—1

गुड़गांव (हरियाणा)

मोबाइल : 9350866190

E-mail : scchaturvedi1935@gmail.com

## आभार

श्रीमती लतिका शाह सिंह का मशक्कूर हूँ। अपने अकेले पन में बादशाह सा सजता गुलाब का फूल, खुली किताब के सामने ख्यावों ख्यालों में खोया शायर, मेरी किताब में शाया ग़ज़लों को और भी रंगीन किए देते हैं। उन्होंने अपनी तमाम मसरूफियत के चलते भी कवर डिज़ाइन करने की ज़हमत उठाई, उसके लिए मैं उनका अहसान मंद हूँ।

एस.सी. चतुर्वेदी

## अनुक्रम

क़लंदर बख्शा जुर्त	9
गुलाम हमदानी मुसहफी, अमरोही	12
मीर बब्बर अली 'अनीस'	15
शैफ़ता	18
अब्दुल ग़फ़ूर नासिख़	21
मुज्तर खैराबादी	24
सैयद फज़्लुल हसन	27
बेखुद देहलवी	30
असर लखनवी	33
हरी चंद अख्तर	36
बहज़ाद लखनवी	39
अख्तर शीरानी	42
साग़र निज़ामी	45
'फ़रहत' कानपुरी	48
बाक़ी सिटीकी	51
नुशूर वाहिदी	54
मुईनअहसान ज़बी	57
हफ़ीज़ होशियारपुरी	60
साहिर होशियारपुरी	63
कैफ़ भोपाली	66
जगन्नाथ आज़ाद	69
फैव्याज़ हाशमी	72
सलाम मछलीशहरी	75
फ़ना निज़ामी कानपुरी	78

हसरत जयपुरी	81
सैफुद्दीन सैफ़	84
महशर बदायूंनी	87
नूर बिज नौरी	90
अदा जाफ़री	93
ख़ातिर गज़नवी	96
नसीम रिफ़अत ग्वालियरी	99
शाहिद कबीर	102
शहज़ाद अहमद	105
अतहर नफ़ीस	108
सुदर्शन फ़ाकिर	111
ज़फ़र गोरखपुरी	114
वाजिदा तवस्सुम	117
शहर यार	120
मंजूर हाशमी	123
निदा फ़ाज़ली	126
‘नदीम’ अजमेरी	129
वसीम वरेलवी	132
मैराज फैज़ा वादी	135
मुमताज़ रशिद	138
अमीर क़ज़लवाश	141
राहत इंदौरी	144
मुनव्वर राना	147
अवगर अहमद	150
विस्मिल रत्लामी	153
सहर अफ़ग़ानी	156

## क़लंदर बख्श जुर्त

पैदाइश	—	1748 — देहली
मृत्यु	—	1809 — लखनऊ
कृति	—	‘कुल्लियाते जुर्त’ 1968 में शाया हुई—लाहौर से।

उनका असली नाम याहया अमन था। कम उम्र में बीनाई खो दी थी। जुर्त लखनऊ स्कूल के नामवर शायर थे। वे पैदा तो देहली में हुए लेकिन परवरिश फैज़ाबाद में हुई और वे फिर लखनऊ चले गए। इंशा की तरह वे भी रईसों में बहुत पसंद किए जाते थे। इंशा के अच्छे दोस्त थे। उनके उस्ताद ज़फ़र अली हसरत थे।

## ग़ुज़्ल—१

बुलबुल सुने ना क्यूँकि चमन की बात  
आवारा-ए-वतन को लगे खुश वतन की बात।

ऐश-ओ-तरव का ज़िक्र करूँ क्या में दोस्तों  
मुझ ग़मज़दा से पूछिए रंज ओ-मेहाँ<sup>1</sup> की बात

शायद उसी का ज़िक्र हो हर रहगुज़र में मैं  
सुनता हूँ गोश-ए-दिल से हर इक मरद ओ जॉ की बात।

‘जुर्त’ खिज़ा के आते चमन में रहा न कुछ  
इक रह गई जबाँ पे गुल ओ-यासमन की बात।

1. अफसोस औ उदासी।

## ग़ज़ल—२

इतना बता मुझे हरजाई हूँ मैं यार कि तू  
मैं हर इक शख्स से रखता हूँ सरोकार कि तू।

कम-सवाती<sup>१</sup> मिरी हरदम है मुखातिब वा-हबाब<sup>२</sup>  
देखें तो पहले हम उस बहर से हों पार कि तू।

नातवानी मिरी गुलशन में ये ही बहसे हैं  
देखें ऐ निक्हते-गुल<sup>३</sup> हम हैं सुबुक-बार<sup>४</sup> कि तू।

दोस्ती करके जो दुश्मन हुआ तू ‘जुर्त’ का  
बेवफा ओ है फिर ऐ शोख सितमगर कि तू।

1. जो स्थिर न हो,
2. छाले पर,
3. फूल की खुशबू,
4. जल्दी।

## गुलाम हमदानी मुसहफी, अमरोही

पैदाइश — 1750

मृत्यु — 1824-25

कृति — दो खण्डों में उर्दू शायरों के बारे में व एक फ़ारसी के शायरों के बारे में।

पिता वली मुहम्मद मुसहफी अमरोहा के रहने वाले थे। हमदानी देहली में रहे पढ़ाई के लिए। आसिफउद्दौला के ज़माने में लखनऊ पहुँचे-पढ़ाई की। फ़ारसी के अच्छे ज्ञाता थे। वे लखनऊ में ही रहे। आतिश लखनवी उनके शागिर्द थे।

वे सैव्यद इंशा, जुर्त, मीर हसन के समकालीन थे।

## मुसहफी की ग़ज़लें—1

आता है किस अंदाज़ से टुक नाज़ तो देखो  
किस धज से क़दम पड़ता है अंदाज़ तो देखो ।

करता हूँ मैं दुज़दीदा<sup>1</sup> नज़र गर कभी उस पर  
नज़रों में परख ले है नज़र बाज़ तो देखो ।

मैं कंगूरा-ए-अर्श<sup>2</sup> से पर मार के गुज़रा  
अल्लाह रे रसाई<sup>3</sup> मेरी परवाज़ तो देखो ।

अब तर है ये दीवाना मियाँ ‘मुसहफी’ सारा  
अंजाम की क्या कहते हो आगाज़ तो देखो ।

1. चोरी से
2. सातवें आसमान की छत
3. पहुँच ।

## ग़ज़ल—२

ख़्वाब था या ख़्याल था क्या था  
हिज्र था या विसाल था क्या था।

चमकी विजली सी पर ना समझे हम  
हुस्न था या जमाल था क्या था।

जिसको हम रोज़े-हिज्र समझे थे  
माह था वो के साल था क्या था।

‘मुसहफ़ी’ कल जो चुप सा बैठा था  
क्या तुझे कुछ मलाल था क्या था।

## मीर बब्बर अली 'अनीस'

पैदाइश — 1802 — फ़ैज़ाबाद (यू.पी.)  
मृत्यु — 1874 — लखनऊ (यू.पी.)

मुग़ल काल में मरसिए व रुबाई लेखन के लिए मशहूर नाम। उनके खानदान में 22 शुअरा हज़रात हुए। उन्हें विश्व प्रसिद्ध कवि होमर और वर्जिल तथा संस्कृत के वाल्मीकि के समतुल्य माना जाता है।

उन्होंने मिलीट्री ट्रेनिंग भी ली थी और वे नए व पुराने हथियारों की अच्छी जानकारी रखते थे।

## अनीस की ग़ज़लें—१

खुद नवेद-ए-जिंदगी<sup>१</sup> लाई क़ज़ा मेरे लिए  
शम-ए-कुश्ता<sup>२</sup> हूँ फ़ना में है ब़क़ा<sup>३</sup> मेरे लिए।

जिंदगी में तो इक दम खुश किया हँस बोल कर  
आज क्यूँ रोते हैं मेरे आश्ना मेरे लिए।

कुंजे-उज़लत<sup>४</sup> में मिसाले-आसिया<sup>५</sup> हूँ गोशा गीर<sup>६</sup>  
रिज़क<sup>७</sup> पहुँचाता है घर बैठे खुदा मेरे लिए।

हर नफ़स आईनाए दिल से ये आती है सदा  
खाक तू हो जा तो हासिल हो जिला मेरे लिए।

खाक से है खाक को उल्फ़त तड़पता हूँ ‘अनीस’  
करबला के वास्ते मैं, करबला मेरे लिए।

1. जिंदगी की शुभ सूचना
2. बुझा चिराग
3. अमरत्व
4. एकांत का कोना
5. पवन चक्री-सा
6. एकांत में रहने वाला
7. रोज़ी।

## ग़ुज़ल—२

कोई 'अनीस' कोई आशना<sup>१</sup> नहीं रखते  
किसी की आस बगैर अज़ खुदा नहीं रखते।

किसी को क्या हो दिलों की शिकस्तगी<sup>२</sup> की ख़बर  
कि टूटने में ये शीशे सदा नहीं रखते।

फ़क्कीर दोस्त जो हो हम को सरफ़राज़<sup>३</sup> करे  
कुछ और फ़र्श बजुज़<sup>४</sup> बोरिया<sup>५</sup> नहीं रखते।

जहाँ की लज़्ज़तो-ख़्वाहिश से है बशर का ख़मीर  
वो कौन है कि जो हिसों-हवा<sup>६</sup> नहीं रखते

'अनीस' वेच के, जान अपनी हिंद से निकलो  
जो तोशा-ए-सफ़र-ए-करवला<sup>७</sup> नहीं रखते।

1. वाक़िफ
2. टूटना
3. अज़ीम
4. सिला
5. बिठौना
6. लालच
7. करवला की यात्रा का सामान/साधन।

## शैफ़ता

पैदाइश — 1804 — देहली  
मृत्यु — 1869 — जहाँगीराबाद (बुलंदशहर)

पूरा नाम था नवाब मुस्तफ़ा अली खाँ शैफ़ता, जहाँगीराबाद के रहने वाले थे और नवाब शैफ़ता कहलाते थे। उनकी शिक्षा मियाँ जी मालमाल और हाजी नूर नक़्श-वंदी की देखरेख में हुई। उन्हें उर्दू, पश्तो और अरबी की अच्छी जानकारी थी। वे मोमिन से उर्दू और ग़ालिब से पश्तों भाषा में सलाह लिया करते थे।

## शैफ़ता की ग़ज़लें—1

दिल का गिला फ़लक की शिकायत यहाँ नहीं  
वो मेहरबाँ नहीं तो कोई मेहरबाँ नहीं।

हम आप पर निसार करें कायनात को  
पर क्या करें विसात में जुज़ नीम-जाँ नहीं।

इक हाले खुश में भूल गए कायनात को  
अब हम वहाँ हैं मुतरिब ओ साक़ी जहाँ नहीं।

क्यूँ ये हुजूमे शोर-ओ-शघब<sup>1</sup> है नुशूर<sup>2</sup> में  
ऐसा तो 'शैफ़ता' हमें ख़्वाबे-गिराँ नहीं।

1. भोड़ का शोर

2. पुनर्जन्म।

## ग़ुज़्ल—२

दिल लिया जिसने बेवफाई की  
रस्म है क्या ये दिलरुबाई की ।

तुम को अंदेशा-ए-गिरफतारी  
याँ तवक्को नहीं रिहाई की ।

दिल लगाया तो नासेहों को क्या  
बात जो अपने जी में आई की ।

आखिर-ए-कार मै-परस्त हुआ  
शान है उसकी किवरिआई<sup>१</sup> की ।

‘शैफ़ता’ वो कि जिसने सारी उम्र  
दीनदारी<sup>२</sup> ओ-पारसाई<sup>३</sup> की ।

१. गव

२. धार्मिक उपदेश

३. पवित्रता ।

## अब्दुल ग़फूर नासिख

पैदाइश	—	1833
मृत्यु	—	1889
कृति	—	अशआरे नासिख 1866, दफ़तरे बेमिसाल 1869, गंजे तवारीख 1873, अरमुगन 1875। आपने उर्दू और पश्तो के शुअरा हज़रात के बारे में 1874 में 'सुखने शुअरा' भी लिखा।

खान बहादुर अबू मोहम्मद अब्दुल ग़फूर, 'नासिख' नाम से शायरी करते थे। एक क़ाज़ी परिवार में पैदा हुए थे फरीदपुर में। उनके पिता कलकत्ता सिविल कोर्ट में वकील थे। नासिख बंगला उर्दू, पश्तो, अरबी, इंग्रिश और हिंदी के भी ज्ञाता थे। वे डिप्टी मजिस्ट्रेट और डिप्टी कलेक्टर की हेसियत से बंगाल में कई जगह पदस्थ रहे, 1860 से 1888 के बीच।

## नासिख की ग़ज़लें—1

पीरी<sup>1</sup> में शौक हौसला फुरसा<sup>2</sup> नहीं रहा  
वो दिल नहीं रहा वो ज़माना नहीं रहा।

झगड़ा मिटा दिया बुते<sup>3</sup>-काफ़िर ने दीन का  
अब कुछ खिलाफ़-ए-मोमिन<sup>4</sup> ओ तरसा नहीं रहा।

कह दो कि क़ब्रे<sup>5</sup> नाश भी की उसकी पाए<sup>6</sup> माल  
नाम ओ निशाँ-ए-आशिक़-ए<sup>7</sup> रुसवा नहीं रहा।

कश्ती बगैर दश्त<sup>8</sup> नावरदी हो किस तरह  
अश्कों से बहर<sup>9</sup> हो गया सहरा<sup>10</sup> नहीं रहा।

क्यूं जाते फिर के कावे<sup>11</sup> से 'नासिख' दैर<sup>12</sup> को  
वो सर नहीं रहा वो सौदा<sup>13</sup> नहीं रहा।

- |                        |                   |
|------------------------|-------------------|
| 1. बुढ़ापा             | 8. चारों ओर घूमना |
| 2. हौसला बढ़ाना        | 9. समुद्र         |
| 3. शक्ति जो आकृष्ण करे | 10. रेगिस्तान     |
| 4. भक्ति के खिलाफ़     | 11. मक्का         |
| 5. क़ब्र               | 12. मंदिर         |
| 6. नाट                 | 13. पागलपन।       |
| 7. प्रमो का नाम ओर लाप |                   |

## गुज़्रल—२

ज़ाहिरा मौत है कज़ा है इश्क  
पर हकीकत में जांफज़ा<sup>१</sup> है इश्क

देता है लाख तरह से तसकीन  
मरजे<sup>२</sup> हिज़ में दवा है इश्क ।

पूछते हैं बुलहवस<sup>३</sup> से वो  
मुझसे पूछे कोई कि क्या है इश्क ।

तादमे मर्ग<sup>४</sup> साथ देता है  
इक महबूबे-बावफ़ा<sup>५</sup> है इश्क ।

इश्क है इश्क जिधर देखो  
कुफ्र ओ ईमान का मुदआ है इश्क ।

देख ‘नासिख़’ गर न होता कुफ्र<sup>६</sup>  
कहते बेशुबाह हम खुदा है इश्क ।

1. ज्ञान की शोभा
2. विठोह की वीमारी
3. लालची
4. मौत तक
5. हमेशा का प्रेमी
6. खुदा को नहीं मानना ।

## मुज्तर खैराबादी

पैदाइश	—	1865 — खैराबाद
मृत्यु	—	1927 — ग्वालियर
कृति	—	बहरे तवील, मर्ग-ए-ग़ज़ल की फ़रियाद।

इनका पूरा नाम इफ़ित खार हुसैन—मुज्तर खैराबादी था। इनके दादा फ़ज़्ले हक़ खैराबादी थे, जो खुद एक शायर और दार्शनिक थे तथा 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के सक्रिय सेनानी थे। मुज्तर खैराबादी वहैसियत जज, टौंक और ग्वालियर में पदस्थ रहे। इन्हें कई पदवियों से नवाज़ा गया जैसे खान बहादुर, एतवार-उल-मुल्क इफ़ितखार उल शुआरा। उर्दू के मशहूर शायर जावेद अख्तर इनके पोते हैं।

“न किसी की आँख का नूर हूँ” ग़ज़ल इनकी ही है,  
जिसे वाज़ वक़्त बहादुर शाह ज़फ़र की मान लेते हैं।

## मुज्तर खैराबादी की ग़ज़लें—1

ये शाम कितनी हँसी है, मगर उदास है दिल  
कोई सबब भी नहीं है मगर उदास है दिल।

बहुत दिनों पे मैं फिर अपने गाँव आया हूँ  
सुना है वो भी यहाँ है, मगर उदास है दिल।

फिर उस मकान की खिड़की में चाँद उगता है  
फिर उसमें कोई मकीं हैं मगर उदास है दिल।

बस इक निगाह जिसे देखने की हसरत थी  
वो आज पहलू नशीं है, मगर उदास है दिल।

बहुत ही ढूब के कहता हूँ ये ग़ज़ल ‘मुज्तर’  
बड़ी शगुफ़ता ज़मीन है, मगर उदास है दिल।

## ग़ज़ल—२

ना किसी की आँख का नूर हूँ न किसी के दिल का क़रार हूँ  
 जो किसी के काम न आ सके मैं वो एक मुश्ते-गुवार हूँ।

मैं नहीं हूँ नग्मा-ए-जां-फ़ज़ा<sup>1</sup> मुझे सुन के कोई करेगा क्या  
 मैं बड़े विरोग<sup>2</sup> की हूँ सदा मैं बड़े दुःखी की पुकार हूँ।

मेरा रंग रूप बिगड़ गया मिरा यार मुझसे विछड़ गया  
 जो चमन ख़िज़ा<sup>3</sup> से उजड़ गया मैं उसी की फ़स्ले<sup>4</sup> बहार हूँ।

पए<sup>5</sup>-फातेहा<sup>6</sup> कोई आए क्यूँ कोई चार फूल चढ़ाए क्यूँ  
 कोई आ के शम्मा जलाए क्यूँ मैं वो बेक़सी<sup>7</sup> का मज़ार हूँ।

ना मैं ‘मुज्तर’ उनका हर्बीब हूँ ना मैं ‘मुज्तर’ उनका रक्हीब हूँ  
 जो विगड़ गया वो नसीब हूँ जो उजड़ गया वो दरार हूँ।

1. खुश कर दे ऐसा नग्मा
2. वीमार
3. पतझड़
4. वस्त बनु
5. के लिए
6. क़द्र पर पटा जाने वाला
7. असहाय
8. क्षेत्र।

## سے یاد فوج لولہ حسن

پیدائش	—	1875 — مونہن (عنایہ)
مृत्यु	—	16 مارچ 1951
उस्तاد	—	تسلیم لکھنواری/ نسیم دہلی
کریتی	—	انٹخواوے هسرت مونہانی/ شرہے—گالیو

شاعری هسرت مونہانی کے نام سے کی।

## سے یادِ فَجْرِ لُولَه حسن کی گُزُلے—۱

کہسے چُپا ڈاں راجے گُم دیدا اے تار کو کیا کر ڈاں  
دیل کی تپیش کو کیا کر ڈاں سو جے زیگر کو کیا کر ڈاں ।

شُوریشے آشیکھی کہاں اُور میری سادگی کہاں  
ہُسٹن کو تیرے کیا کر ڈاں اپنی نجّر کو کیا کر ڈاں ।

گُم کا ن دیل میں ہو گُزُر وسل کی شہر ہو یون وسرا  
سہب کُو ہُول ہے مگر خاکہ اسہر کو کیا کر ڈاں ।

ہال میرا ثا جب بُدھا تار ن ہُرد تُمھے خبر  
باد میرے ہُوا اسرا، اب میں اسرا کو کیا کر ڈاں ।

## ग़ज़ल-२

चुपके-चुपके रात-दिन आँसू बहाना याद है  
हमको अब तक आशिकी का वो ज़माना याद है।

तुझसे मिलते ही वो खुश बेबाक़ हो जाना मेरा  
और तेरा दाँतों में वो उंगली दबाना याद है।

खेंचने लगना वो मेरा परदे का कौना दफ़अतन  
और दुपट्टे से तेरा वो मुँह छुपाना याद है।

तुझको जब तन्हा कभी पाना तो अजराहे लिहाज़  
हाले दिल बातों ही बातों में जताना याद है।

आ गया गर वस्तु की शब भी कहीं ज़िक्रे-फ़िराक़  
वो तेरा रो-रो के भी मुझको रूलाना याद है।

## बेखुद देहलवी

पैदाइश	—	1882 — भरतपुर (राजस्थान)
मृत्यु	—	2 अक्टूबर, 1955 — दिल्ली में।
कृति	—	गुफ्तारे बेखुद और शहसवारे बेखुद दोनों कितावें उनके जिंदा रहते ही शाया हुईं।

पूरा नाम सैयद वही दुर्दीन अहमद। दाग़ देहलवी के शार्गिंद बने 1891 में, जब अल्ताफ़ हुसैन हाली उन्हें देहली लेकर आए। इनके पिता सैयद शमशुद्दीन 'सालिम' उर्दू के शायर थे।

## बेखुद देहलवी की ग़ज़लें—1

मय पिलाकर आपका क्या जाएगा  
जाएगा ईमान जिसका जाएगा।

देखकर मुझको वो शर्मा जाएगा  
ये तमाशा किससे देखा जाएगा।

जाऊँ बुतखाने से क्यूँ काबे को मैं  
हाथ से ये भी ठिकाना जाएगा।

क़ल्ल की जब उसने दी धमकी मुझे  
कह दिया मैंने भी देखा जाएगा।

पी भी ले दो घूंट ज़ाहिद पी भी ले  
मैंकरदे से कौन प्यासा जाएगा।

## गुज़्रल—२

शमा-ए-मज़ार थी ना कोई सोग़वार था  
तुम जिस पे रो रहे थे वो किसका मज़ार था ।

तड़पूँगा उम्र भर दिले मरहूम के लिए  
कमबख्त नामुराद लड़कपन का यार था ।

जादू है या तिलिस्म तुम्हारी जुबान में  
तुम झूठ कह रहे थे मुझे एतवार था ।

क्या-क्या हमारे सजदे की रुसवाईयाँ हुईं  
नक्शे क़दम किसी का सरे रह गुज़ार था ।

## असर लखनवी

पैदाइश — 1885

मृत्यु — 1967

असर लखनवी का पूरा नाम ज़फ़र अली ख़ान था। वे शायरी ‘असर लखनवी’ के नाम से करते थे।

## असर लखनवी की ग़ुज़लें—१

फिरते हुए किसी की नज़र देखते रहे  
दिल खँूँ हो रहा था मगर देखते रहे।

कुछ दिन ये भी रंग रहा इंतज़ार में  
आँख उठ गई जिधर, बस उधर देखते रहे।

जब आशियाँ की याद असीरी<sup>1</sup> में आ गई<sup>2</sup>  
उड़ते हुए हवा में शरर देखते रहे।

सुनाते रहो कि देख लिया जलवा वेहिजाब  
अपना ही सब फ़रेबे नज़र देखते रहे।

सामने सदहज़ार तमाशा थी बेखुदी  
आँखें थीं वंद और ‘असर’ देखते रहे।

1. केदखाना।

## गुज़्रल—२

दिल का रोना ठीक नहीं है मुँह को कलेजा आने दो  
थमते-थमते अश्क थमेंगे नासेह को समझाने दो ।

कहते-कहते हाल कहेंगे ऐसी तुम्हें क्या जल्दी है  
दिल को ठिकाने होने दो और आप में हमको छाने दो ।

बज़मे-तरब में देख के मुझको फेर ली आँखें साझी ने  
मेरे लिए थे ज़हर हलाहल इसके भरे पैमाने दो ।

खुद से गिरेवां फटते थे अक्सर चाक हवा में उड़ते थे  
अब के जुनून का जोश नहीं है आई बहार तो आने दो ।

दिल को 'असर' के लूट लिया शोख निगाह इक क़ाफिर ने  
कोई ना इसको रोने से रोको आग लगी है बुझाने दो ।

## हरी चंद अख्तर

पैदाइश — 15 अप्रैल, 1901 — सहबा (होशियारपुर) पंजाब  
मृत्यु — 01 जनवरी, 1958 — नई दिल्ली  
कृति — कुफ्फा ईमान।

हरी चंद ने एम.ए. अंग्रेज़ी, पंजाब यूनिवर्सिटी से किया। ज्यादातर लाहौर से शाया रिसाले 'पारस' में लिखते रहे। पंजाब लेजिस्लेटिव एसेम्बली के कार्यालय में भी काम किया। पाकिस्तान बनने के बाद देहली चले आए।

## हरी चंद अख्तर की ग़ज़लें—१

शबाब आया, किसी बुत पर फिदा होने का वक्त आया  
मेरी दुनिया में, बंदे के खुदा होने का वक्त आया।

उन्हें देखा तो ज़ाहिद ने कहा ईमान की ये है  
कि अब इन्सान को सजदारवा होने का वक्त आया।

तकल्लुम की ख़ामोशी कह रही है हरफे-मतलब से  
कि अश्क़आमेज़ नज़रों से अदा होने का वक्त आया।

खुदा जाने ये है औजे-यकीं या पस्ती-ए-हिम्मत  
खुदा से कह रहा हूँ ना खुदा होने का वक्त आया।

हमें भी आ पड़ा है दोस्तों से काम कुछ यानी  
हमारे दोस्तों के वेवफ़ा होने का वक्त आया।

## ग़ज़ल—२

उमीदों से दिले बरवाद को आवाद करता हूँ  
मिटाने के लिए दुनिया नई ईज़ाद करता हूँ।

तेरी मियादे-ग़म पूरी हुई ऐ ज़िंदगी खुश हो  
क़फ़स टूटे न टूटे मैं तुझे आज़ाद करता हूँ।

मैं अपने दिल का मालिक हूँ मेरा दिल एक बस्ती है  
कभी आवाद करता हूँ कभी बरवाद करता हूँ।

मुलाक़ातें भी होती हैं मुलाक़ातों के बाद अक्सर  
वो मुझको भूल जाते हैं मैं उनको याद करता हूँ।

## बहज़ाद लखनवी

पेदाइश — 1901 — लखनऊ (यू.पी.)  
मृत्यु — 1974 — कराँची (पाकिस्तान) रमज़ान माह में।

पूरा नाम सरदार एहमद था। बहज़ाद के पिता सज्जाद हुसैन एक धार्मिक व्यक्ति थे और 'चिराग' तख़ल्लुस से शायरी भी करते थे। बहज़ाद की शिक्षा कलकत्ता और अलीगढ़ में हुई। उन्होंने रेल्वे में मुलाज़मत कर ली थी लेकिन सेहत खराबी की वजह से छोड़ दी। बाद में वे पाकिस्तान चले गए। जहाँ उन्होंने, रेडियो पाकिस्तान कराँची में काम शुरू कर दिया। उनकी गाई नात लगातार दस साल तक सुबह बजाई जाती थी।

## बहज़ाद लखनवी की ग़ज़लें—१

ए ज़ज्बा-ए-दिल गर मैं चाहूँ हर चीज़ मुक़ाबिल आ जाए  
मंज़िल के लिए दो गाम चलूँ और सामने मंज़िल आ जाए।

हाँ याद मुझे तुम कर लेना आवाज़ मुझे तुम दे लेना  
इस राहे-मोहब्बत में कोई दरपेश जो मुश्किल आ जाए।

इस ज़ज्बा-ए-दिल के बारे में इक मशविरा तुम से लेता हूँ  
उस वक़्त मुझे क्या लाज़िम है जब तुझपे मेरा दिल आ जाए

ए बक़ेरतजल्ली<sup>1</sup> क्या तूने मुझको भी मूसा समझा है  
मैं तूर नहीं जो जल जाऊँ जो चाहे मुक़ाबिल आ जाए।

आता है जो तूफाँ आने दे कश्ती का खुदा खुद हाफ़िज़ है  
मुश्किल तो नहीं इन मौजों में वहता हुआ साहिल आ जाए।

1. विजली की लो।

## ग़ज़ल-२

दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे  
वरना कहीं तक़दीर तमाशा ना बना दे।

ए देखने वालों मुझे हँस-हँस के ना देखो  
तुमको भी मोहब्बत कहीं मुझसा ना बना दे।

मैं ढूँढ़ रहा हूँ मेरी वो शम्मा कहाँ है  
जो बज्म की हर चीज़ को परखाना बना दे।

आखिर कोई सूरत भी तो हो ख़ाना ए दिल की  
काबा नहीं बनता है तो बुतख़ाता बना दे।

‘बहज़ाद’ हर इक ग़म पे इक सजदा-ए-मस्ती  
हर ज़रेको संग-ए-दर-ए-जानाँ<sup>1</sup> ना बना दे।

1. प्रेयसी के दर का पथर।

## अख्तर शीरानी

पैदाइश	—	5 मई, 1905	— टौंक (राजस्थान)
मृत्यु	—	9 सितम्बर, 1958	— लाहौर
उस्ताद	—	ताजवर नजीबावादी।	
कृति	—	सुबहे बहार, अख्तर सितां, शहनाज़	

पूरा नाम मुहम्मद दाऊद खाँ।

## अख्तर शीरानी की ग़ज़लें—१

किसी से कभी दिल लगाया न था  
मुहब्बत का सदमा उठाया न था।

हसीनों के रोने पे हँसते थे हम  
कभी इक आँसू बहाया न था।

कोई हूर हो या परी अपना सर  
किसी आस्तां पे झुकाया न था।

सियाह गेसुओं को तमन्ना रही  
मगर दिल को हमने फंसाया न था।

ज़माने में कौन था ज़ोहरा वश  
कि सीने से जिसने लगाया न था।

बसर की सारी एशो इशरत में उम्र  
कभी रंज हमने उठाया न था।

मगर इक झलक ने हमें खो दिया  
ये सदमा तो हमने उठाया न था।

## ग़ज़्ल—२

क्या कह गई किसी की नज़र कुछ ना पूछिए  
क्या कुछ हुआ है दिल पे असर कुछ ना पूछिए।

वो देखना किसी का कनखियों से बार-बार  
वो बार-बार उसका असर कुछ ना पूछिए।

रो-रो के इस तरह से कटी रात क्या कहें  
मर-मर के कैसे की है बसर कुछ ना पूछिए।

‘अख्तर’ दयारे-हुस्न में पहुँचे तो हैं मर के हम  
क्यूं कर हुआ है तय ये सफर कुछ ना पूछिए।

## सागर निज़ामी

पैदाइश	—	21 दिसम्बर, 1905	—	अलीगढ़ (यू.पी.)
मृत्यु	—	1983	—	दिल्ली
कृति	—	सुबूही वादा-ए-मशरिक कहकशाँ रंगमहल मौज़-ए-साहिल नेहरुनामा	— — — — — —	1934 1934 1934 1943 1949 1967।

सागर निज़ामी के पिता सरदार अहमदयार खाँ पेशे से डॉक्टर थे, जो ब्रिटिश सरकार के मुलाज़िम थे। सागर निज़ामी ने 'ऑल इंडिया रेडियो' में भी मुलाज़मत की। उनकी लिखी नज़्में और ग़ज़लें बहुत मशहूर हुईं। वे सीमाव अकबराबादी के शार्गिंद रहे।

सन् 1969 में उन्हें 'पद्म भूषण' और 1982 में ग़ालिब अवॉर्ड से नवाज़ा गया।

सागर निज़ामी की ही दो ग़ज़लें 'यूँ न रह-रह कर हमें तरसाईए' और 'हैरत से तक रहा है जहाने वफ़ा मुझे' गाकर मास्टर मदन मौसिकी की दुनिया में अमर हो गए।

## सागर निजामी की गुज़लें—१

हादसे<sup>१</sup> क्या-क्या तुम्हारी बेरुखी से हो गए  
सारी दुनिया के लिए हम अजनबी से हो गए

गुर्दिशे<sup>२</sup> दोराँ, ज़माने की नज़र, आँखों की नींद  
कितने दुश्मन एक रस्मे दोस्ती से हो गए।

कुछ तुम्हारी गेसुओं की वरहमी<sup>३</sup> ने कर दिया  
कुछ अंधेरे मेरे घर में रोशनी से हो गए।

यूँ तो हम आग़ाह<sup>४</sup> थे सैव्याद<sup>५</sup> की तदबीर<sup>६</sup> से  
हम असीर-ए-दाम-ए-गुल<sup>७</sup> अपनी खुदी<sup>८</sup> से हो गए।

हर क़दम ‘सागर’ नज़र आने लगी हैं मंज़िलें  
मरहले<sup>९</sup> तय मेरी कुछ आवारगी<sup>१०</sup> से हो गए।

1. दुर्घटना
2. वक़्त के चलते
3. फैली हुई
4. ख़वरदार
5. शिकारी
6. उपाय
7. रेती
8. अस्म जना
9. मंज़िल
10. आवारगन।

## ग़ज़ल—२

काफिर गेसू वालों की रात बसर यूँ होती है  
हुस्न हिफाज़त करता है और जवानी सोती है।

मुझमें तुझमें फ़र्क नहीं, मुझमें तुझमें फ़र्क है ये  
तू दुनिया पर हँसता है दुनिया मुझ पर हँसती है।

सब्रो सुकूं दो दरिया हैं भरते-भरते-भरते हैं।  
तसकीन दिल की बारिश है होते-होते-होती है।

जीने में क्या राहत थी मरने में तकलीफ़ है क्या  
तब दुनिया क्यों हँसती थी अब दुनिया क्यों रोती है।

दिल को तो तश्खीश<sup>1</sup> हुई चारागरों से पूछूँगा  
दिल जब धकधक करता है वो हालत क्या होती है।

रात के आँसू ऐ ‘सागर’ फूलों से भर जाते हैं।  
सुबह चमन इस पानी से कलियों का मुँह धोती है।

1. जाँचना ।

## ‘फरहत’ कानपुरी

पैदाइश — 1906

मृत्यु — 16 जुलाई, 1952

कृति — ज़माना, साक्षी, रियासत, गुलदस्ता आदि।

पूरा नाम गंगाधर नाथ फरहत कानपुरी था।

पिता वाबू विशंभरनाथ निगम एडवोकेट थे। विद्यार्थी जीवन में फरहत सैक्रेटरी, अखिल भारतीय उर्दू कॉन्फरेन्स रहे। सन् 1929 में सिटी कांग्रेस कमेटी के सैक्रेटरी थे। उनके उस्ताद एहसान सुम्बली (कानपुर) थे।

## फ़रहत कानपुरी की ग़ज़लें—1

आँखों में बसे हो तुम आँखों में अयां हो कर  
दिल ही में न रह जाओ आँखों से निहाँ होकर।

हाँ लब पे भी आ जाओ अंदाजे बयाँ होकर  
आँखों में भी आ जाओ अब दिल की ज़बाँ होकर।

है शेख़ का ये आलम अल्लाह रे बदमस्ती  
आँखों से ज़ाहिर है आया है जहाँ हो कर।

बद नामी ओ वरबादी अंजामे-मुहब्बत है  
दुनिया में रहा 'फ़रहत' रुसवा-ए-जहाँ होकर।

## ग़ज़्ल—२

कोई भी हम सफर नहीं होता  
दर्द क्यूँ रात भर नहीं होता ।

राहे दिल खुद-ब-खुद है मिल जाती  
कोई भी रहवर नहीं होता ।

आह का भी ना ज़िक्र कर ए दिल  
आह में भी असर नहीं होता ।

अब तो महफिल से चल दिया ‘फ़रहत’  
अब किसी का गुज़र नहीं होता ।

## बाक़ी सिद्धीक़ी

पेदाइश — 1908 — सेहम (रावल पिंडी) पाकिस्तान  
मृत्यु — 8 जनवरी, 1973  
कृति —

बाक़ी का असली नाम था मुहम्मद अफ़ज़ल कुरैशी। उन्होंने छोटी बहर की ग़ज़लें लिखीं। शिक्षक के रूप में जीवन शुरू किया बाद में वे रेडियो पाकिस्तान, रावल पिंडी में गीत लेखक बन गए।

## बाक़ी सिद्धीकी की ग़ज़लें—१

कहता है हर मकीं<sup>१</sup> से मकाँ बोलते रहो  
इस चुप में भी है जी का ज़ियाँ<sup>२</sup> बोलते रहो ।

हर याद हर ख्याल है लफ़ज़ों का सिलसिला  
ये महफ़िले नवा है यहाँ बोलते रहो ।

क़दमों पे बार<sup>३</sup> होते हैं सुनसान रास्ते  
लम्बा सफ़र है हम सफ़रों<sup>४</sup> बोलते रहो ।

है ज़िंदगी भी टूटा हुआ आईना तो क्या  
तुम भी बा-तरज़-ए-शीशा-गराँ<sup>५</sup> बोलते रहो ।

‘बाक़ी’ जो चुप रहोगे तो उठेंगी उंगलिया  
है बोलना भी रस्मे जहाँ बोलते रहो ।

1. रहने वाले
2. नुक्सान
3. बाँझ
4. सहयात्री
5. शीशा चमकाने वाला ।

## ग़ज़्ज़ल—२

हर तरफ बिखरे हैं रंगीन साए  
राहरो<sup>१</sup> कोई न ठोकर खाए।

जिंदगी हफ्ते-ग़लत<sup>२</sup> ही निकली  
हमने मानी तो बहुत पहनाए।

तुझको देखा तेरे वादे देखे  
ऊँची दीवार के लम्बे साए।

बंद कलियों की अदा कहती है  
बातं करने के हैं सौ पैराए।

दामने-ख़ुवाब<sup>३</sup> कहाँ तक फैले  
रेग<sup>४</sup> की मौज कहाँ तक जाए।

बामो<sup>५</sup> दर काँप उठे हैं ‘बाक़ी’  
इस तरह झूम के बादल आए।

1. मुसाफ़िर
2. ग़लत शब्द
3. सपने का विस्तार
4. रेत
5. छत और दरवाज़ा।

## नुशूर वाहिदी

पैदाइश — 1911 — शेखपुर, बलिया (यू.पी.)

मृत्यु — 1983

कृति — सवाहे — हिंद

आप सात भाई-बहन थे—शुरुआती तालीम घर पर हुई। छोटी उम्र में कविता कहने लगे—13 साल की उम्र में शायर के रूप में जाने गए।

एक मुशायरे में ‘जिगर’ सा: ने पढ़ते हुए कुछ देर आराम चाहा—  
नुशूर स्टेज पर आ गए और ग़ज़लें सुनाई। जिगर सा: ने खूब तारीफ़ की।

फ़िल्मों में लिखने से इंकार किया और वो शुहरत नहीं पाई जो इनके समकालीन शुअरा पा गए। उनकी मृत्यु पर प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने स्वयं शोक प्रकट किया। कानपुर में एक पार्क नुशूर के नाम पर है।

## नुशूर वाहिदी की ग़ज़तें—१

नई दुनिया मुजस्सम दिलकशी मालूम होती है  
मगर इस हुस्न में दिल की कमी मालूम होती है।

हिजाबों में नसीमें—जिंदगी मालूम होती है  
किसी दामन की हल्की थरथरी मालूम होती है।

मुहब्बत इक मुसलसल बदज़नी मालूम होती है  
कि उनसे हर मुलाक़ात आखिरी मालूम होती है।

मिरी रातों की खुन्की है तेरे गेसू-ए-पुरखाम में  
यह बढ़ती छांव भी कितनी घनी मालूम होती है।

ये दिल की तश्नगी है, या नज़र की प्यास है साक़ी  
हर एक बोतल जो ख़ाली है, भरी मालूम होती है।

दिया ख़ामोश है, लेकिन किसी का दिल तो जलता है  
चले आओ, जहाँ तक रौशनी मालूम होती है।

जिधर देखो, 'नुशूर' इक आलमे-दीगर नज़र आया  
मुसीबत में ये दुनिया अजनबी मालूम होती है।

## गुज़्रल—२

सहर और शाम से कुछ तो निखरता जा रहा हूँ मैं  
कि जीता जा रहा हूँ और मरता जा रहा हूँ मैं।

गुले रंगी यह कहता है कि खिलना हुस्न होता है  
मगर गुंचा समझता है निखरता जा रहा हूँ मैं।

जवानी जा रही है और मैं महवे तमाशा हूँ  
उड़ी जाती है मंज़िल और ठहरता जा रहा हूँ मैं।

बहुत ऊँचा उड़ा लेकिन अब इस मौजे-तख्युल से  
किसी दुनियाएँ रंगी में उतरता जा रहा हूँ मैं।

‘नुशूर’ आखिर कहाँ तक फ़िक्रे दुनिया दिल दुखाएगी  
ग़मे हस्ती को ज़ौके-शेर करता जा रहा हूँ मैं।

## मुईनअहसान ज़बी

पैदाइश — 21 अगस्त, 1912 — आज़मगढ़ (यू.पी.) के मुवारकपुर में।

मृत्यु	—	2005	— अलीगढ़
कृति	—	फ्रोज़ा	— 1951
		सुख्खने मुख्खसर	— 1960
		गुदाज़े शब	— 1985

ज़बी, ‘फ़ानी’ बदायूँनी से अदबी तौर से बहुत मुतासिर थे। उन्होंने 1936 में अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से एम.ए. और 1938 में पी-एच.डी. हासिल की। मुंबई और लखनऊ में कुछ अरसा मुलाज़मत की। वे भोपाल में दस माह के लिए टीचर भी रहे। सन् 1942-44 में वे ‘आजकल’ देहली के सम्पादक रहे। सन् 1945 में ए.एम.यू. में लेक्चरार बने और रीडर के तौर पर रिटायर हुए।

## मुईनअहसान ज़्यूबी की ग़ज़लें—1

हम दहर के वीराने में जो कुछ भी नज़ारा करते हैं  
अश्कों की जुबाँ में कहते हैं आहों से इशारा करते हैं।

ए मौजे-बला, उनको भी ज़रा, दे दो चार थपेड़े हल्के से  
कुछ लोग अभी तक साहिल से, तूफाँ का नज़ारा करते हैं।

क्या जानिए कब ये पाप कटे, क्या जानिए वो दिन कब आए  
जिस दिन के लिए इस दुनिया में क्या कुछ न ग़वारा करते हैं।

क्या तुझको पता क्या तुझको खबर दिन रात ख्यालों में अपने  
ए काकुले<sup>1</sup> गेती<sup>2</sup> हम तुझको दिन रात संवारा करते हैं।

1. बाल

2. दुनिया।

## ग़ज़्ल—२

मिले ग़म से अपने फ़ुरसत तो सुनाऊँ वो फ़साना  
कि टपक पड़े नज़र से मय-ए-इशरते<sup>१</sup> शबाना ।

कभी दर्द की तमन्ना कभी कोशिश-ए-मादवा  
कभी बिजलियों की ख्वाहिश कभी फ़िक्रे आशियाना ।

मेरे क़हक़हों के ज़द पर कभी ग़र्दिशें जहाँ की  
तेरे आँसुओं की रौ में कभी तल्ख़-ए-ज़माना ।

कभी मैं हूँ तुझसे नाला कभी मुझसे तू परेशाँ  
कभी मैं तेरा हदफ़<sup>२</sup> हूँ कभी तू मेरा निशाना ।

जिसे पा सका न ज़ाहिद जिसे छू सका न सूफ़ी  
वही तीर छेड़ता है मेरा सोजे शायराना ।

1. सुख भोग की रात की शराब
2. निशाना / टारगेट ।

## हफ़ीज़ होशियारपुरी

पैदाइश — 1912 — होशियारपुर  
मृत्यु — 1973 — कराँची (पाकिस्तान)  
हफ़ीज़ होशियारपुरी नासिर काज़मी के उस्ताद थे।  
वे फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ के समकालीन थे—  
गवर्नमेंट कॉलेज, लाहौर में।

पूरा नाम अब्दुल हफ़ीज़ (हफ़ीज़ होशियार पुरी)

## हफ्तीज़ की ग़ज़लें—१

कभी देखी है शायद तेरी सूरत इससे पहले भी  
कि गुज़री है मेरे दिल पे ये हालत इससे पहले भी।

ना जाने कितने जलवे पेश रै थे तेरे जलवों के  
तुझी से बारहा की है मुहब्बत इससे पहले भी।

सुनाती हैं कोई अफ़साना तेरी सहमगीं नज़रें  
हुई है मुझसे गुस्ताखाना जुर्त इससे पहले भी।

मेरी किस्मत कि मैं इस दौर में बदनाम हूँ वरना  
वफ़ादारी थी शर्तें — आदमियत इससे पहले भी।

## ग़ुज़्ल—२

तेरी तलाश में हम जब कभी निकलते हैं  
इक अजनबी की तरह रास्ते बदलते हैं।  
दराज़ हो ग़मे हिजरां कि हासिले - हिजरां  
वो हौसले हैं जो आगोशे ग़म में पलते हैं।  
रवा नहीं है ग़मे-इश्क़ इस क़दर भी ग़रूर  
तेरे बगैर भी दुनिया के काम चलते हैं।  
कभी जो हृद से बढ़ी उनकी याद तो समझे  
कि उनके दिल में भी कुछ बलवले मचलते हैं।  
शवे-फिराक़ कुछ ऐसी भी तीरगी तो नहीं  
कभी-कभी सरे-मिज़गां चराग़ जलते हैं।  
अब उनके ग़म से भी महसूम हो ना जाएं कभी  
वो जानते हैं कि इस ग़म से दिल बहलते हैं।

## साहिर होशियारपुरी

पैदाइश	—	10 मार्च, 1913	—	होशियारपुर (पंजाब)
मृत्यु	—	12 अगस्त, 1994	—	फरीदाबाद (हरियाणा)
कृति	—	जलतरंग, सहरे हरफ़, सहरेनग्मा सहरे ख्याल, सहरे ग़ज़ल, नूँकूशदाग़।		

साहिर होशियारपुरी का असली नाम रामप्रकाश था। वे जोश मल्सयानी के शार्गिर्द थे। इनकी लिखी ग़ज़ले जगजीत सिंह के द्वारा गाई गईं और म़क़बूल हुईं।

सन् 1989 में साहिर सा. को ग़ालिब अवॉर्ड से नवाज़ा गया।

## साहिर होशियारपुरी की ग़ज़लें—१

तुमने सूली पे लटकते जिसे देखा होगा  
वक़्त आएगा वही शख्स मसीहा होगा।

ख़्वाब देखा था कि सहरा में बसेरा होगा  
क्या ख़बर थी कि यही ख़्वाब तो सच्चा होगा।

मैं फ़िज़ाओं में विखर जाऊँगा खुशबू बनकर  
रंग होगा, ना बदन होगा ना चेहरा होगा।

## ग़ज़्ल—२

हर इक फूल के दामन में खार कैसा है  
बताए कौन कि रंगे-बहार कैसा है।

वो सामने थे तो दिल को सुकूं था हासिल  
चले गए हैं तो अब बेक़रार कैसा है।

यकीन था कि न आएगा मुझसे मिलने कोई  
तो फिर ये दिल को मेरे इंतिज़ार कैसा है।

ये किसके खून से दामाने चमन रंगीन  
ये सुख्ख फूल सर-ए-शाख दार कैसा है।

## कैफ़ भोपाली

पैदाइश — 1917 — लखनऊ (यू.पी.)

मृत्यु — 1991 — भोपाल (म.प्र.)

कैफ़ भोपाली का खानदान कश्मीर से लखनऊ पहुँचा। वाद में कैफ़ भोपाल आ गए। कुछ अर्से वाद बंबई पहुँच कर फ़िल्मों के लिए लिखना शुरू किया। फ़िल्म ‘पाकीज़ा’ का मशहूर गीत उनका ही लिखा हुआ है—“चलो दिल दार चलो चाँद के पार चलो”। उनकी वेटी परवीन कैफ़ एक अच्छी शायरा है।

## कैफ भोपाली की ग़ज़लें—1

तुझे कौन जानता था मेरी दोस्ती से पहले  
तेरा हुस्न कुछ नहीं था मेरी शायरी से पहले।

इधर आ रक्खीब मेरे मैं तुझे गले लगा लूँ  
मेरा इश्क बेमज़ा था तेरी दुश्मनी से पहले।

कई इंकिलाब आए कई खुश खिराम<sup>1</sup> गुजरे  
न उठी मगर क़्यामत तेरी कम<sup>2</sup> सिनी से पहले।

मेरी सुवह के सितारे तुझे ढूँढ़ती है आँखें  
कहीं रात डस न जाए तेरी रौशनी से पहले।

1. अच्छी चाल

2. कम उम्र।

## ग़ज़्ज़ल—2

ख़ानक़ाह<sup>1</sup> में सूफ़ी मुँह छुपाए बैठा है  
ग़ालिबन<sup>2</sup> ज़माने से मात खाए बैठा है।

क़त्ल तो नहीं बदला क़त्ल की अदा बदली  
तीर की जगह क़ातिल साज़ उठाए बैठा है।

उनके चाहने वाले धूप-धूप फिरते हैं  
गेर उनके कूचे में साए-साए बैठा है।

वाए<sup>3</sup> आशिक़ी-ए-नादाँ क़ायनात ये तेरी  
इक शिकस्ता शीशे को दिल बनाए बैठा है।

दूर बारिश ए गुलचीं वाँ<sup>5</sup> है दीदा-ए-नर्गिस<sup>6</sup>  
आज हर गुल<sup>7</sup> नर्गिस खार-खार बैठा है।

1. दरगाह
2. शायद
3. अफ़सोस
4. ना समझ
5. खुला
6. आत्ममुग्ध की आव
7. नर्गिस का फूल।

## जगन्नाथ आज़ाद

पैदाइश	—	5 दिसम्बर, 1918 —‘ईसा खेल’—मियाँ वाली जिला (पंजाब)
मृत्यु	—	24 जुलाई, 2004 — देहली
कृति	—	‘रुदादे इक़बाल’ पाँच भागों में लिखा।

आज़ाद ‘अंजुमन — तरकिकए — उर्दू हिंदी’ के वाइस प्रेसी-डेन्ट चुने गए 1989 में और फिर प्रेसीडेंट 1993 में और अंत तक वहाँ रहे। राजा राम मोहन राय हाई स्कूल, मियांवाली से 1933 में मैट्रिकुलेशन किया, एफ.ए. 1934 में और गोर्डन कॉलेज, रावल पिंडी से एम.ए. फारसी 1944 में किया। जम्मू और कश्मीर यूनिवर्सिटी ने डी.लिट अवॉर्ड हुई।

## आज़ाद की ग़ज़लें—१

तेरी बज़मे तरव में सोजे पिन्हाँ लेके आया हुँ  
चमन में यादे अच्यामे—बहाराँ लेके आया हुँ।

तेरी महफिल से जो अरमांनो हसरत लेके निकला था,  
वो हसरत लेके आया हुँ वो अरमाँ लेके आया हुँ।

तुम्हारे वास्ते ऐ दोस्तों मैं और क्या लाता,  
वतन की सुधह और शामे ग़रीबाँ ले के आया हुँ।

मैं अपने घर में आया हुँ मगर अंदाज़ तो देखो  
कि अपने आपको मानिंदे महमाँ लेके आया हुँ।

## ग़ज़्ल-२

मुमकिन नहीं कि बज़मे<sup>१</sup>-तरब फिर सजा सकूँ  
अब ये भी हैं बहुत कि तुम्हें याद आ सकूँ।

ये क्या तिलिस्म है कि तेरी जलवागाह से  
नज़दीक आ सकूँ न कहीं दूर जा सकूँ।

जौके निगाह और बहारों के दरमियान  
परदे गिरे हैं वो कि ना जिनको उठा सकूँ।

किस तरह कर सको बहारों को मुतमईन  
अहले चमन जो मैं भी चमन में ना आ सकूँ।

तेरी हसीं फिजाँ में मेरे ऐ नये वतन  
ऐसा भी है कोई जिसे अपना बना सकूँ।

‘आज़ाद’ साजे दिल पे हैं रक्साँ के ज़मज़मे<sup>२</sup>  
खुद सुन सकूँ मगर ना किसी को सुना सकूँ।

1. खुशी की महफिल
2. कंपकंपी।

## फैव्याज़ हाशमी

पैदाइश	—	1920 — कलकत्ता (वेस्ट बंगाल)
मृत्यु	—	29 नवम्बर, 2011 — कराँची (पाकिस्तान)
कृति	—	1944 में 'राग रंग' के नाम से। कई कौमी तराने भी लिखे।

इनके पिता सैव्यद मुहम्मद हुसैन हाशमी 'दिल गीर' थे, जो एक अच्छे शायर थे और स्टेज ड्रामा लेखक थे। वे बाद में पाकिस्तान चले गए।

जब वे सातवीं क्लास में थे तो उन्होंने 'चमन में गुंचा ओ गुल का तवस्सुम देखने वालो, कभी तुमने हसीन कलियों का मुरझाना भी देखा है' लिखी थी। 9वीं क्लास में आते-आते तो वे बाक़ायदा मुशायरों में शिरकत करने लगे थे।

इन्होंने कलकत्ता में 'ग्रामोफोन कंपनी ऑफ इंडिया' में काम की शुरुआत की, जहाँ वे 1943-1948 तक रहे। उस वक्त 16 रिकॉर्ड औसतन बनते थे—जो एक बार सारे फैव्याज़ हाशमी के लिखे हुए बने। सन् 1948 में ढाका और 1951 में लाहौर में पदस्थ रहे। कुल 2000 गाने फ़िल्मों और रिकॉर्डिंग कम्पनी के लिए लिखे। ग्रामोफोन कम्पनी के म्यूज़िक डारेक्टर कमल दास गुप्ता के साथ एक अरसे तक जुड़े रहे। तलत महमूद का गाया 'तस्वीर तेरी दिल मेरा बहला न सकेगी' इनका लिखा गीत बहुत मशहूर हुआ। इनके लिखे गीत गाकर जगमोहन ने अनोखी शोहरत पाई।

## फैय्याज़ हाशमी की गुज़लें—1

ना तुम मेरे ना दिल मेरा ना जाने नातवां मेरी  
तसव्वुर में भी आ सकती नहीं मजबूरियाँ मेरी।

ना तुम आए ना चैन आया ना मौत आई शबे वादा  
दिले मुज़तर था मैं था और थीं बेताबियाँ मेरी।

अबस नादानियों पर आप अपनी नाज़ करते हैं  
अभी देखी कहाँ हैं आपने नादानियाँ मेरी।

ये मंज़िल ये हँसी मंज़िल जवानी नाम है जिसका  
यहाँ से और आगे बढ़ना ऐ उम्रे रवां मेरी।

## ग़ज़्यल—२

टकरा ही गई मेरी नज़र उनकी नज़र से  
धोना ही पड़ा हाथ मुझे क़ल्बो — जिगर से।

इज़हारे मुहब्बत न किया बस इसी डर से  
ऐसा न हो गिर जाऊँ कहीं उनकी नज़र से।

ऐ जौके तलब जोशे जुनूँ ये तो बता दे .  
जाना है कहाँ और हम आए हैं किधर से।

‘फैय्याज़’ अब आया है जुनूँ जोश पे अपना  
हँसता है ज़माना मैं गुज़रता हूँ जिधर से।

## सलाम मछलीशहरी

पैदाइश — 1 जुलाई, 1921 — मछलीशहर (जौनपुर) यू.पी.  
मृत्यु — 19 नवम्बर, 1975 — लिवर सिरोसिस से।  
कृति — सन् 1966 में उर्दू एकादमी ने ‘इंत खावे मछली शहरी’  
के नाम से इनकी ग़ज़लों का एक मजमुआ छापा था।

सलाम उर्दू, फ़ारसी व अंग्रेज़ी भाषा के ज्ञाता थे। एआईआर दिल्ली में ‘उर्दू सर्विस’ में मुलाज़मत भी की। जगजीत सिंह ने भी इनकी कई ग़ज़लें  
गाई हैं।

## सलाम मछलीशहरी की ग़ज़लें—१

सुबह दम यूँ ही फ़ासुरदा<sup>१</sup> हो गया  
ए दिले नाजुक तुझे क्या हो गया।

सीन-ए-वरानत<sup>२</sup> से शोला-सा उठा  
ग़म ज़दों के दिल का नग्मा हो गया।

शुक्रिया ए गर्दिशो-जामे<sup>३</sup>-शाराब  
मैं भरी महफ़िल में तनहा हो गया।

रात दिल को था सहर<sup>४</sup> का इंतज़ार  
अब ये ग़म है क्यों सवेरा हो गया।

बुझ गई कुछ इस तरह शामे-'सलाम'  
जैसे कि बीमार अच्छा हो गया।

1. दुखी
2. वाय्यंत्र
3. जाम का दौर
4. सुबह।

## ग़ज़ल—२

बन गई है मौत कितनी खुश अदा मेरे लिए  
सर झुका कर फूल करते हैं, दुआ मेरे लिए।

तुम ना मुरझाओ तो कलियो कल बता देना उसे  
कुछ समझ कर खोई-खोई है सबा मेरे लिए।

मैं तो बस उनके ही रंग ओ नूर का अक्स था  
मुञ्जतरिब है क्यूं सितारों की ज़िया मेरे लिए।

जगमगा उठती है दिल में एक मुक़द्रदेस रौशनी  
जब नहीं होता कहीं भी आसरा मेरे लिए।

सोचता हूँ फिर उठा लूँ बरबत-ए-कोहना ‘सलाम’  
मुंतज़िर है शेर ओ नग्मा का खुदा मेरे लिए।

## फ़ना निज़ामी कानपुरी

पैदाइश — 1922 — कानपुर  
मृत्यु — 18 जुलाई, 1988 — कानपुर  
कृति — कुछ उपलब्ध नहीं है।

फ़ना निज़ामी, 1922 में कानपुर में मिर्ज़ा निसार अली बेग के रूप में पैदा हुए थे। उनकी शिक्षा सिर्फ़ मज़्हबी थी।

## फ़ना निजामी की ग़ज़लें—१

दिल से अगर कभी तेरा अरमान जाएगा  
घर को लगा के आग ये मैहमान जाएगा।

सब होंगे उससे अपने तारुफ़ की फ़िक्र में  
मुझको मेरे सुकूत से पहचान जाएगा।

इस कुफ्रे इश्क़ से मुझे क्यों रोकते हो तुम  
ईमान वालों मेरा ही ईमान जाएगा।

आज उससे मैने शिकवा किया था शरारतन  
किसको ख़बर थी इतना बुरा मान जाएगा।

अब उस मुकाम पर हैं मेरी बेक़रारियाँ  
समझाने वाला हो के परेशान जाएगा।

दुनिया पे ऐसा वक़्त पड़ेगा कि एक दिन  
इन्सान की तलाश में इन्सान जाएगा।

## ग़ज़्ल—२

मेरे चेहरे से ग़म आशकारा नहीं  
ये न समझो के मैं ग़म का मारा नहीं।

इूबने को तो इूबे मगर नाज़ है  
अहले साहिल को हमने पुकारा नहीं।

यूँ दिखाता है आँखें हमें बाग़बाँ  
जैसे गुलशन पे कुछ हळ हमारा नहीं।

ज़िक्रे साक्षी ही काफ़ी नहीं ऐ ‘फ़ना’  
वेपिए मैकदे में गुज़ारा नहीं।

## हसरत जयपुरी

पैदाइश	—	15 अप्रैल, 1922	—	जयपुर (राजस्थान)
मृत्यु	—	17 सितम्बर, 1999	—	मुंबई
कृति	—	आबशारे ग़ज़ल		

हसरत जयपुरी का नाम इक़बाल हुसैन था। पिता जनाब फ़िदा हुसैन से उर्दू व फारसी की तालीम पाई। 20 वर्ष की उम्र से शायरी करना शुरू किया। तमाम फ़िल्मों के गीत लिखे जैसे — ‘बरसात’, ‘अंदाज़’, ‘ससुराल’, ‘सेहरा’, ‘राम तेरी गंगा मैली हो गई’ आदि।

ढेरों अवॉर्ड्स से नवाज़े गए। World University Round Table के द्वारा उन्हें डाक्टरेट से भी नवाज़ा गया।

## हसरत जयपुरी की ग़ज़लें—१

शोले ही सही आग लगाने के लिए आ  
फिर तूर के मंज़र को दिखाने के लिए आ।

ये किसने कहा है मेरी तकदीर बना दे  
आ अपने ही हाथों से मिटाने के लिए आ।

ए दोस्त मुझे गर्दिशो हालात ने धोरा  
तू जुल्फ़ की कमली में छुपाने के लिए आ।

दीवार है दुनिया इसे राहों से हटा दे  
हर रस्म मुहब्बत की मिटाने के लिए आ।

मतलब तेरी आयद से है दरमाँ<sup>1</sup> से नहीं  
'हसरत' की क़सम दिल ही दुखाने के लिए आ।

1. ठीक होना।

## ગુજરાત-૨

યે કૌન આ ગઈ દિલરૂબા મહકી-મહકી  
ફિજા મહકી-મહકી હવા મહકી-મહકી ।

વો આઁખોં મેં કાજલ વો બાલોં મેં ગજરા  
હથેલી પે ઉસકે હિના મહકી-મહકી ।

ખુદા જાને કિસ-કિસ કી યે જાન લેગી  
વો ક્રાતિલ અદા વો સવા મહકી-મહકી ।

સવેરે-સવેરે મેરે ધાર પે આઈ  
એ ‘હસરત’ વો બાદે-સવા મહકી-મહકી ।

## سے فکر دیں سے فک

پیدائش — مارچ، 1922 — امیرتسر (پنجاب)

مृत्यु — 1993 — پاکستان

کریتی — خمسے کا کھل، کافے گول فروش।

سن 1947 کے بٹوارے کے باعث وے پاکستان چلے گئے�ے اور آخیر تک وہیں رہے۔ سن 1950 میں انہوں نے پاکستانی فیلموں کے لیے گانے لیے گئے۔ ویسے تو سے فک نے لیخنا کھنڈی پہلے شروع کر دیا تھا، کالج کے جنمے میں بھی شوہر ت پاری۔

## सैफुद्दीन सैफ की ग़ज़लें—1

हमको तो गरदिशे हालात पे रोना आया  
रोने वाले तुझे किस बात पे रोना आया।

कैसे मर-मर के गुज़ारी है तुम्हें क्या मालूम  
रात भर तारों भरी रात पे रोना आया।

कितने बेताब थे रिमझिम में पियेंगे लेकिन  
आई बरसात तो बरसात पे रोना आया।

कौन रोता है किसी और के ग़म की ख़ातिर  
सबको अपनी ही किसी बात पे रोना आया।

‘सैफ’ ये दिन तो क़्रायामत की तरह गुज़रा है  
जाने क्या बात थी हर बात पे रोना आया।

## ग़ज़्ज़ल—२

करीब मौत खड़ी है ज़रा ठहर जाओ  
क़ज़ा से आँख लड़ी है ज़रा ठहर जाओ।

थकी-थकी-सी फ़ज़ाएँ बुझे-बुझे तारे  
बड़ी उदास घड़ी है ज़रा ठहर जाओ।

नहीं उम्मीद कि हम आज की सहर देखें  
ये रात हमपे कड़ी है ज़रा ठहर जाओ।

अभी न जाओ कि तारों का दिल धड़कता है  
तमाम रात पड़ी है ज़रा ठहर जाओ।

फिर इसके बाद कभी हम न तुमको रोकेंगे  
लवों पे साँस अड़ी है ज़रा ठहर जाओ।

दम-ए-फ़िराक़<sup>१</sup> में जी भर के तुमको देख तो लूँ  
ये फैसले की घड़ी है ज़रा ठहर जाओ।

मोत

अलग होने का वक़्त।

## મહશર બદાયુંની

પૈદાઇશ	—	4 માર્ચ, 1922 — બદાયું (યૂ.પી.)
મૃત્યુ	—	9 નવમ્બર, 1994 — કરાઁચી (પાકિસ્તાન)
કૃતિ	—	ગુજરાતિ, ચિરાગ મેરે હમ નવા, ફ્રસ્લે ફરદા આદિ।

લખનવી, દેહલવી ઔર અમરોહી—ઉર્ડૂ અદબ મેં તીન ખાસ શૃંખલાઓને અલાવા ચૌથી હૈ બદાયુંની। ઇનમેં એક નામ હૈ ફારુખ અહમદ, જો મહશર બદાયુંની કે નામ સે શાયરી કરતે થે। ઉનકી ઉર્ડૂ ઔર પર્શિયન કી તાલીમ ઘર પર હી હુઈ। સન્ 1947 મેં વે પાકિસ્તાન ચલે ગયે। સન્ 1950 મેં પાકિસ્તાન રેડિયો સે જુડ્ગ ગए। સન્ 1994 મેં વહીં ઉનકા નિધન હુआ।

## महशर बदायूंनी की ग़ज़लें—१

जिंदगी भर हम लवे दरिया रहे  
और सराबो<sup>१</sup> की तरह तिश्ना रहे।

मिरी तारीकी से घर क्यूँ हो सियाह  
आँखों बुझ जाएं दीया जलता रहे।

बन गए हर अहद के दिल की उमंग  
जिंदा लोग इस तरह भी जिंदा रहे।

जागती आँखों से क्या आए नज़र  
आदमी का ज़ेहन अगर सोया रहे।

‘महशर’ इस तारों की दुनिया में मुदाम<sup>२</sup>  
चाँद की मानिंद हम तनहा रहे।

1. मृगतृष्णा
2. हमेशा।

## ग़ज़्ल—२

अब के बरसात तो घर करके मिसमार<sup>१</sup> गई  
दर को रोका था थपेड़ों में कि दीवार गई।

क्या सफ़र किसका मकाँ, कैसी हवा किस का शजर  
तेज़ी-ए-पर गई ख़ास-रेज़ी-ए-मिनकार गई।

हो गए गोशा नशीं घर में जो हम ख़ाक बसर  
कौन-सी आबरू-ए-कूचा-ओ बाज़ार गई।

दायरे सारे दिल ओ ज़ेहन के ज़ंजीर बने  
छिन गई रुहे-अमल गरदिशो<sup>२</sup> परकार गई।

कुछ ज़्यादा ही परेशान हैं पलटती मौजे  
दर्द में झूबी हुई लय कोई उस पार गई।

1. मिटा

2. कम्पास का गोला।

## नूर बिज नौरी

पैदाइश — 24 जनवरी, 1924 — बिजनौर (यू.पी.)  
मृत्यु — 8 अक्टूबर, 1996 — बिजनौर (यू.पी.)  
कृति — जगमग 1954, हिन्द्र का सूरज 1995  
चिरागों का सफर 1996।  
एक उपन्यास भी लिखा — नाम था ‘हायमुहब्बत हाय  
ज़माने’।

नूर विजनौरी ने पाकिस्तान रेडियो के लिए नाटक भी लिखे।

## नूर बिजनोरी की ग़ज़लें-1

दिल के सहरा में कोई आस का जुगनू भी नहीं  
इतना रोया हूँ कि अब आँख में आँसू भी नहीं।

क़ासाए़<sup>1</sup> दर्द लिए फिरती है गुलशन की हवा  
मेरे दामन में तेरे प्यार की खुशबू भी नहीं।

छिन गया मेरी निगाहों से भी एहसासे-जमाल<sup>2</sup>  
तेरी तस्वीर में पहला-सा वो जादू भी नहीं।

दिल वो कमबख्त कि धड़के ही चला जाता है  
ये अलग बात कि तू जीनते पहलू भी नहीं।

ये अजब रहगुज़र है कि चट्ठाने तो बहुत  
और सहारे को तेरी याद के बाजू भी नहीं।

1. भिक्षा पात्र

2. खूबसूरती का भाव।

## ग़ज़्ज़ल—२

ज़्ज़लज़्ज़ला आया वो दिल में वक्त की रफ़तार से  
खुद-ब-खुद तस्वीर तेरी गिर पड़ी दीवार से।

चुपके-चुपके खींचता हूँ काँटों का हिसार<sup>१</sup>  
मैं कि अब डरने लगा हूँ फूल की महकार से।

हम बलानोशों<sup>२</sup> ने ज़हरे आगही<sup>३</sup> भी पी लिया  
चलते-चलते हम भी ठोकर खा गए कोहसार<sup>४</sup> से।

हम से शिकवा कर रहा था आज दामाने<sup>५</sup> तिही  
तोड़ लाए माहो<sup>६</sup> अंजुम, फ़िक्र<sup>७</sup> के गुलज़ार<sup>८</sup> से।

‘नूर’ साहब खुल न जाए तकें उल्फ़त<sup>९</sup> का भरम  
आपकी खामोशियों से, आपके अशआर से।

- |                    |                       |
|--------------------|-----------------------|
| 1. धेग             | 6. चाँद सितारे        |
| 2. बहुत पीने वाला  | 7. चिंतन।             |
| 3. ज्ञानरूपी विष्य | 8. वाग्               |
| 4. पर्वत           | 9. मुहब्बत ठोड़ देना। |
| 5. खाली दामन       |                       |

## अदा जाफ़री

पैदाइश	—	22 अगस्त, 1924	—	बदायूँ (यू.पी.)
मृत्यु	—	12 मार्च, 2015	—	कराची (पाकिस्तान)
कृति	—	मैं साज़ ढूँढती रही 1950 शहरी दर्द 1967		

उन्होंने 12 साल की उम्र में लिखना शुरू किया—तब वे ‘अदा बदायूँनी’ के नाम से शायरी करती थीं। ‘अदा’ उर्दू अदब की पहली शायरा मानी जाती हैं। उन्हें 2002 में ‘प्राइड ऑफ परफोरमेंस’ से नवाज़ा गया। सन् 1967 में ‘आदम जी अदबी अवॉर्ड’ और सन् 1981 में ‘मैडल ऑफ एक्सीलेंस’ भी दिया गया था।

## अदा जाफ़री की ग़ज़लें—१

होठों पे कभी उनके मेरा नाम ही आए  
आए तो सही बरसरे<sup>१</sup>-इल्ज़ाम ही आए।

तारों से सजा लेंगे राहे-शहरे<sup>२</sup>-तमन्ना  
मँक़<sup>३</sup> दूर नहीं सुवह चलो शाम ही आए।

क्या राह बदलने का गिला हम सफ़रो से  
जिस राह से चले तेरे दर-ओ-बाम<sup>४</sup> ही आए।

हेरां हैं लव-वस्ता<sup>५</sup> हैं दिलगीर हैं गुंचे<sup>६</sup>  
खुशबू की जवानी तिरा पैग़ामे ही आए।

१. इल्ज़ाम के तौर
२. इच्छा के शहर का रास्ता
३. योग्यता
४. दरवाजा और ठन
५. चुप
६. प्रभावित।

## गुज़्ल—२

एक आईना रु-ब-रु है अभी  
उसकी खुशबू से गुफ्तगू है अभी।

वही खाना बदोश उम्मीदें  
वही बेसबर दिल की खू है अभी।

बोलते हैं दिलों के सन्नाटे  
शोर-सा ये जो चार सू है अभी।

ज़र्द पत्तों को ले गई है हवा  
शाखा में शिदूदत-ए-नुमू है अभी

हम सफर भी है रह गुज़र भी है  
ये मुसाफिर ही कू-ब-कू है अभी।

## ख़ातिर गज़नवी

पैदाइश — 1925 — पेशावर  
मृत्यु — 2008 — कराची  
कृति — रूपरंग और ख्याल

पूरा नाम मुहम्मद इब्राहिम बेग ख़ातिर गज़नवी था।

खोजी, स्तंभ लेखक, शिक्षा विद ख़ातिर गज़नवी प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन के NWFP Chapter के वाइस प्रेसीडेंट थे। लगभग 50 किताबें उर्दू एवं हिंदी में लिखी। Pakistan Radio के Producer थे 1942—1962 तक। प्रेसीडेंट अवॉर्ड विजेता ख़ातिर चेयरमेन, उर्दू विभाग, पेशावर यूनिवर्सिटी से Retire हुए। कई भाषाएँ जैसे चाइनीज़, इंग्लिश, उर्दू और मलयालम के ज्ञाता थे।

## खातिर गज़नवी की ग़ज़लें—1

कैसी चली है अबके हवा तेरे शहर में  
बंदे भी हो गए हैं खुदा तेरे शहर में।

क्या जाने क्या हुआ कि परेशान हो गए  
इक लहजा रुक गई थी सबा तेरे शहर में।

कुछ दुश्मनी का ढब है ना अब दोस्ती के तौर  
दोनों का एक रंग हुआ तेरे शहर में।

शायद उन्हें पता था कि 'खातिर' है अजनवी  
लोगों ने उसको लूट लिया तेरे शहर में।

## ग़ज़्ज़ल—२

गो ज़रा सी बात पर बरसों के याराने गए  
लेकिन इतना तो हुआ कुछ लोग पहचाने गए।

गर्मिए महफ़िल फ़क़्त इक नारा-ए मस्ताना है  
और वो खुश है कि इस महफ़िल से दीवाने गए।

मैं इसे शोहरत कहूँ या अपनी रूसवाई कहूँ  
मुझसे पहले उस गली में मेरे अफ़साने गए।

यूँ तो वो मेरी रगेजां से भी थे नज़्दीकतर  
आंसुओं की धुंध में लेकिन न पहचाने गए।

वहशतें कुछ इस तरह मेरा मु़क़द्दर हो गई  
हम जहाँ पहुँचे हमारे साथ वीराने गए।

अब भी उन यादों की खुशबू ज़ेहन में महफूज़ है  
वारहा हम जिनसे गुलज़ारों को महकाने गए।

क्या क़्रायामत है कि 'खातिर' कुश्ताए शब भी थे हम  
सुबह जब हुई तो मुजरिम हम ही गरदाने गए।

## नसीम रिफ़अत ग्वालियरी

पैदाइश — 1930 — ग्वालियर (म.प्र.)  
कृति — हम तुम, एहसास के फूल, कसक, नज़ेरे हबीब, फैज़ो  
अता, वादिए नूर और परवाज़।

नसीम साः का पूरा नाम अब्दुल क़्यूम है, पिता का नाम श्री काले खाँ है। शायरी की शुरुआत 1955 से हुई। शिक्षा जामिया से उर्दू में अदीब और कामिल हासिल की। उन्होंने अखिल भारतीय मुशायरों में शिरकत की। आपकी ग़ज़ले शमा, बीसवीं सदी, शोला-ओ-शबनम आदि रिसालों में शाया होती रहीं। तमाम मशहूर गायकों ने आपकी ग़ज़लें गाई हैं। आपको हम्द, नाअत, नज़्म, ग़ज़ल, कता, रुबाई में महारत हासिल है।

आपको आईना-ए-ग़ज़ल, मुंबई, वज़मे उर्दू ग्वालियर, कारवाने अदव ग्वालियर, वज़मे क़रार बड़ौदा (गुजरात) से नवाज़ा गया।

## नसीम ग़ालियरी की ग़ज़लें—१

हमने जब ख़्वाब की ताबीर<sup>१</sup> से बातें की हैं  
अपने ही पावों की ज़ंजीर से बातें की हैं।

बज़मे तख़ईल<sup>२</sup> में आईना मुक्काबिल रख कर  
एक तस्वीर ने तस्वीर से बातें की हैं।

लिख दिया है जो तेरी शोख़ नज़र ने दिल पर  
हमने अक्सर उसी तेहरीर<sup>३</sup> से बातें की हैं।

दरो दीवार पे तस्वीर सजा कर तेरी  
बारह कस्मे<sup>४</sup>-जहाँगीर से बातें की हैं।

रात हमने तेरी यादों का जगाकर जादू  
अपनी सोई हुई तक़दीर से बातें की है।

जुरअते—फ़िकरे सुख़न और फिर इस दर्जा 'नसीम'  
कभी ग़ालिब तो कभी मीर से बातें की हैं।

1. अर्थ
2. एकात्म में
3. लिखा हुआ
4. जहाँगीर का महल।

## ग़ुज़्रल-२

बस अभी हो जाएंगे आँसू रवां रहने भी दो  
तुम सुनोगे और मेरी दास्तां रहने भी दो।

खुद भटकते हो गुबारे कारवाँ में आज भी  
और कहलाते हो मीरे'-कारवाँ रहने भी दो।

फिर कोई मंसूर पहुँचेगा मकामे दार तक  
इससे बेहतर है मुझको बेजुबाँ रहने भी दो।

इस चमन के वाग़बानों से ये कह दो ऐ 'नसीम'  
कुछ निशाने-आशियाँ तो है, धुँआ रहने भी दो।

1. नेता ।

## शाहिद कबीर

पैदाइश — 1 मई, 1932 — नागपुर (महाराष्ट्र)  
मृत्यु — 11 मई, 2001 — नागपुर (महाराष्ट्र)  
कृति — कच्ची दीवारें — उपन्यास 1958  
मिट्टी का मकाँ—1979  
जिसे महाराष्ट्र स्टेट उर्दू एकादमी द्वारा पुरस्कृत किया  
गया।  
पहचान—2000 ये भी पुरस्कृत हुई।

नागपुर में शाहिद कबीर ने AGMARK में मुलाज़मत की थी। वे लालकिले में आयोजित मुशायरे में अक्सर बुलाए जाते थे। सन् 1950 में देहली में रहते हुए उनकी मुलाक़ात अली सरदार जाफ़री, जुबैर रिज़वी और नरेश कुमार शाद से हुई। सन् 1957 में एक ड्रामा ‘मिर्ज़ा ग़ालिब’ लिखा जो राष्ट्रपति भवन में खेला गया। उनकी ग़ज़लें कई गायकों द्वारा गाई गई हैं।

## शाहिद कबीर की ग़ज़लें—1

ज़मीन पे चल न सका आसमान से भी गया  
कटा के पर को परिंदा उड़ान से भी गया।

किसी के हाथ से निकला हुआ वो तीर हूँ जो  
हदफ़' को छू न सका और कमान से भी गया

भुला दिया तो भुलाने की इंतहा कर दी  
वो शख्स अब मेरे वहम ओ गुमान से भी गया।

तवाह कर गई, पक्के मकान की ख़्वाहिश  
मैं अपने गाँव के कच्चे मकान से भी गया।

पराई आग में खुदा तो क्या मिला 'शाहिद'  
उसे बचा न सका अपनी जान से भी गया।

1. निशाना / टारगेट।

## ग़ुज़्ल—२

रेत की लहरों से दरिया की रवानी माँगे  
मैं वो प्यासा हूँ जो सहराओं से पानी माँगे।

अब्र तो अब्र शजर भी हैं हवा की ज़द में  
किससे दम भरको कोई छाँव सुहानी माँगे।

उड़ते पत्तों पे लपकती है यूँ डाली - डाली  
जैसे जाते हुए मौसम की निशानी माँगे।

मैं वो भूला हुआ चेहरा हूँ कि आईना भी  
मुझ से मेरी कोई पहचान पुरानी माँगे।

ज़द<sup>१</sup> मलबूस<sup>२</sup> में आती हैं बहारें 'शाहिद'  
और तू रंग खिजाओं<sup>३</sup> का भी धानी माँगे।

1. पीला
2. कपड़ों
3. पतझड़ ।

## शहज़ाद अहमद

पैदाइश	--	16 अप्रैल, 1932 — अमृतसर (पंजाब)
मृत्यु	-	2 अगस्त, 1912 — लाहौर (पाकिस्तान)
कृति	-	सदफ़, जलती-बुझती आँखें, टूटा हुआ पल, उतरे मेरी खाक पर सितारे, बिछड़ जाने की रुत।

पार्टीशन के बाद शहज़ाद पाकिस्तान चले गए थे। मैट्रिक अमृतसर से ही किया। सन् 1956 में एम.एस.सी. साइकोलोजी और 1958 में एम.ए. फ़िलोस़फी में किया। 1990 में प्राइड ऑफ परफोरमेंस से उन्हें नवाज़ा गया।

## शहज़ाद अहमद की ग़ुज़लें—१

जल भी चुके परवाने हो भी चुकी रुसवाई  
अब खाक उड़ाने को बैठे हैं तमाशाई ।

तारों की ज़िया<sup>१</sup> दिल में इक आग लगाती है  
आराम से रातों को सोते नहीं सौदाई

रातों की उदासी में ख़ामोश है दिल मेरा  
वेहिस<sup>२</sup> हैं तमन्नाएं नींद आई कि मौत आई ।

अब दिल को किसी करवट आराम नहीं मिलता  
इक उम्र का रोना है दो दिन की शनासाई

इक शाम वो आए थे इक रात फ़रोज़ा<sup>३</sup> थी  
वो शाम नहीं लौटी वो रात नहीं आई ।

1. गौशनी

2. चेतना शून्य / ग़ाफ़िल

3. प्रकाशमय ।

## ग़ज़ल—2

जो शजर सूख गया है वो हरा कैसे हो  
मैं पर्यावर तो नहीं मेरा कहा कैसे हो।

दिल के हर ज़रें पे है नक़श मुहब्बत उसकी  
नूर आँखों का है आँखों से जुदा कैसे हो।

जिसको जाना ही नहीं उसको खुदा क्यूं माने।  
और जिसे जान चुके हैं वो खुदा कैसे हो।

उम्र सारी तो अंधेरे में नहीं कट सकती  
हम अगर दिल न जलाएं तो ज़िया कैसे हो।

जिससे दो रोज़ भी खुल कर ना मुलाक़ात हुई  
मुद्दतों बाद मिले भी तो गिला कैसे हो।

किन निगाहों से उसे देख रहा हूँ 'शहज़ाद'  
मुझको मालूम नहीं, उसको पता कैसे है।

## अतहर नफीस

पैदाइश	—	22 फरवरी, 1933	—	अलीगढ़
मृत्यु	—	21 नवम्बर, 1980	—	करांची (पाकिस्तान)
कृति	—	‘कलम’ जो फुनून में 1975 में लाहौर में शाया हुआ।		

अतहर का पूरा नाम कुंवर अतहर अलीखान था। वे अपने आप में ही महदूद रहे और उन्होंने ता उम्र शादी नहीं की। सन् 1948 में पाकिस्तान चले गए। कई सरकारी विभागों में विभिन्न पदों पर रहे। वे एक कॉलम निस्ट भी थी। अतहर वैसे तो अलीगढ़ में ही शायरी में डूबे रहे पर करांची जाकर उनकी शायरी परवान चढ़ी। उनकी एक ग़ज़ल ‘वो इश्क़ जो हमसे रुठ गया’ को कई गायकों ने गाया है। वे अपने आखिरी दिनों में लम्बी बीमारी से जूझते रहे।

## अतहर नफीस की ग़ज़लें—१

सोचते और जागते साँसों का एक दरिया हूँ मैं  
अपने गुमगश्ता<sup>१</sup> किनारों के लिए बहता हूँ मैं।

जल गया सारा बदन इन मौसमों की आग में  
एक मौसम रुह का है जिसमें अब ज़िंदा हूँ मैं।

मेरे ओठों का तबस्सुम दे गया धोखा मुझे  
तूने मुझको बाग़ जाना देख ले सहरा<sup>२</sup> हूँ मैं।

देखिए मेरी पज़ीराई<sup>३</sup> को अब आता है कौन  
लम्हा भर को वक़्त की दहलीज़ पर आया हूँ मैं।

1. जो सो गया उसका दर्द
2. रेगिस्तान
3. स्वागत।

## ग़ज़ल—२

हम भी बदल गए तेरी तर्ज़े-अदा<sup>१</sup> के साथ-साथ  
रंगे हिना के साथ-साथ शोखिए पा के साथ-साथ ।

निकहते<sup>२</sup>-जुल्फ़ ले उड़ी मिस्ले<sup>३</sup> ख्याल चल पड़ी  
चलता है कौन देखिए आज हिना के साथ-साथ ।

इतनी जफ़ातराज़ियाँ<sup>४</sup> इतनी सितम शियारियाँ<sup>५</sup>  
तुम भी चले हो कुछ क़दम अहले वफ़ा के साथ-साथ ।

वहशते-दर्द-ए-हिज़्र<sup>६</sup> ने हमको जगा-जगा दिया  
नींद कभी जो आ गई ठंडी हवा<sup>७</sup> के साथ-साथ ।

होश उड़ा-उड़ा दिए राह के इज़ित<sup>८</sup> राब ने  
निकहते<sup>९</sup> गुल चली तो थी बादे<sup>१०</sup> हवा के साथ-साथ ।

१. कहने का अंदाज़
२. वालों की खुशबू
३. ख्याल की तरह
४. रज़ामंटी
५. अलहदा होने का डर/दर्द
६. होना
७. वेचेनी
८. फूल की खुशबू
९. सुवह की हवा ।

## सुदर्शन फ़ाकिर

पैदाइश — 1934 — फ़ीरोज़पुर (पंजाब)  
मृत्यु — 18 फरवरी, 2008 — जालंधर (पंजाब)

फ़ाकिर ने एम.ए. (राजनीति) व एम.ए. (अंग्रेज़ी) में जालंधर से किया। मोहन राकेश के नाटक ‘आषाढ़ का एक दिन’ का निर्देशन भी किया। जालंधर AIR में काम किया बम्बई आने से पहले। फ़िल्मों से जुड़े। गीत और संवाद लेखन भी किया। बेग़म अख़्तर व जगजीत सिंह ने आपकी जो ग़ज़ले गाई हैं वे बेहद म़क़बूल हुईं।

## सुदर्शन फ़ाकिर की ग़ज़लें—१

ज़ख्म जो आपकी इनायत है इस निशानी को क्या नाम दें हम  
प्यार दीवार बन के रह गया इस कहानी को क्या नाम दें हम।

आप इल्ज़ाम धर गए हम पर इक एहसान कर गए हम पर  
आपकी ये मेहरबानी है, मेहरबानी को क्या नाम दें हम।

आपको यूं ही ज़िंदगी समझा धूप को हमने चाँदनी समझा  
भूल ही भूल जिसकी आदत है इस जवानी को नाम क्या दें हम।

रात सपना बहार का देखा दिन हुआ तो गुबार सा देखा  
वेवफ़ा वक़्त बेजुबान निकला बेजुबानी को नाम क्या दें हम।

## ग़ज़्यल—२

फ़लसफ़े इश्क में पेश आए सवालों की तरह  
हम परेशाँ ही रहे अपने ख्यालों की तरह।

शीशागर बैठे रहे ज़िक्रे-मसीहा लेकर  
और हम टूट गए काँच के प्यालों की तरह।

जब भी अंजामे मुहब्बत ने पुकारा खुद को  
वक्त ने पेश किया हमको मिसालों की तरह।

ज़िक्र जब होगा मुहब्बत में तबाही का कहीं  
याद हम आयेंगे दुनिया को हवालों की तरह।

## ज़फ़र गोरखपुरी

पैदाइश — 5 मई, 1935 — गोरखपुर (यू.पी.)  
कृति — तिशा, वादिए संग, चिरागे चश्मेतर  
आर-पार का मंज़र, खोकरु के फूल

ज़फ़र ने कम उम्र में ही शायरी शुरू कर दी थी। सन् 1966 में ज़फ़र ने कुछ गाने तलत महमूद और सी.एच. आत्मा के लिए लिखे जिन्हें HMV ने रिकॉर्ड किया। सन् 1984 में पकंज उधास के लिए भी लिखा और शोहरत पाई। सन् 1997 में उन्होंने देश का प्रतिनिधित्व किया यू.एस.ए. में इंटरनेशनल मुशायरे में।

## ज़फ़र गोरखपुरी की ग़ज़लें—१

धूप है क्या और साया क्या है अब मालूम हुआ  
ये सब खेल तमाशा क्या है अब मालूम हुआ।

हँसते फूल का चेहरा देखूँ और भर आई आँख  
अपने साथ ये क़िस्सा क्या है अब मालूम हुआ।

हम बरसों के बाद भी उनको अब तक भूल न पाए  
दिल से उनका रिश्ता क्या है अब मालूम हुआ।

सहरा-सहरा प्यासे भटके सारी उम्र जले  
बादल का इक टुकड़ा क्या है अब मालूम हुआ।

## ग़ज़ल—२

मिले किसी से नज़र तो समझो ग़ज़ल हुई  
रहे अपनी ख़ाबर तो समझो ग़ज़ल हुई।

मिला के नज़रों को वो हया से फिर  
झुका ले कोई नज़र तो समझो ग़ज़ल हुई।

इधार मचल कर उन्हें पुकारे जुनूँ मेरा  
भड़क उठे दिल उधर तो समझो ग़ज़ल हुई।

उदास विस्तर की सिलवटें जब तुम्हें चुभें  
न सो सको रात भर तो समझो ग़ज़ल हुई।

वो बदगुमाँ हो तो शेर सूझे न शायरी  
वो महरवाँ हों 'ज़फ़र' तो समझो ग़ज़ल हुई।

## वाजिदा तबस्सुम

पैदाइश	—	1935 — अमरावती (महाराष्ट्र)
मृत्यु	—	7 दिसम्बर, 1911 — मुंबई (महाराष्ट्र)
कृति	—	तहखाना, कैसे समझाऊँ, फूल खिलने दो, उतरन, ज़ख्मे दिल और महक, ज़र ज़न, ज़मीन। कुल 27 किताबें शाया हुई।

सन् 1947 में उसमानि या यूनिवर्सिटी से एम.ए. उर्दू में करने के बाद वे हैदराबाद चली गईं। उनकी शायरी में दक्कनी लहज़ा आसानी से देखा जा सकता है।

उन्होंने 'बीसवीं सदी' रिसाले में भी काम किया। 'उतरन' उनकी बहुत मक़बूल कहानी है। जिस पर एक टी.वी. फ़िल्म भी बनी। उन्हें व्यंग लेखक मुजतबा हुसैन इस्मत चुगताई के बाद साहिबे असलूब मानते हैं।

## વાજિદા તબસ્સુમ કી ગૃજુલેં—૧

હમારે ઉનકે મરાસમ કી વાત મત પૂછો  
યે સિલસિલા તો કહીં દૂર જાને સે મિલતા હૈ।

હૈ અપને મુક્કદુદર કી વાત ક્યા કહિએ  
હમારે જ્ખુમ કો મરહમ કહીં સે મિલતા હૈ।

હમારે પ્યાર કે કિસ્સે ગલી-ગલી બિખરે  
યે મર્તવા બડે સૂદો જિયાં સે મિલતા હૈ।

સિતારોં જૈસી યે આઁખેં યે ચાઁદ સા ચેહરા  
તુમ્હારા સિલસિલા કુછ આસમાં મેં મિલતા હૈ।

હમારા જિંક્ર કિતાબોં મેં ઢુંઢને વાલો  
હમારા જિંક્ર તો સારે જહાઁ સે મિલતા હૈ।

## ग़ज़्यल—२

कुछ न कुछ तो ज़रूर होना है  
सामना आज उनसे होना है।

तोड़ो फेंको रखो करो कुछ भी  
दिल हमारा क्या खिलौना है।

जिंदगी और मौत का मतलब  
तुमको पाना है तुमको खोना है।

इतना डरना भी क्या है दुनिया से  
जो भी होना है वो तो होना है।

उठके महफिल से मत चले जाना  
तुम से रौशन ये कोना-कोना है।

## शहर यार

पैदाइश — 16 जून, 1936 — आँवला (बरेली—यू.पी.)  
मृत्यु — 13 फरवरी, 2012  
कृति — इस्मे-आज़म — 1965  
सातवाँ दर — 1965  
हिज्र के मौसम — 1978  
ख्वाब के दर बंद हैं — 1987  
इस पुस्तक पर साहित्य एकादमी पुरस्कार मिला।

पूरा नाम अख्लाक़ मोहम्मद खाँ शहर यार। इनका जन्म एक राजपूत मुस्लिम परिवार में हुआ। बुलंदशहर में शुरुआती तालीम हुई जो अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में पूरी हुई।

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर के पद पर रहे और चेअरमैन उर्दू विभाग की हैसियत से रिटायर हुए। अलीगढ़ में ही रहे और सारा वक्त शेरो शायरी को देते थे।

‘शेरो हिक्मत’ के को-एडीटर भी रहे।

## शहर यार की ग़ज़लें—१

सूरज का सफर ख़त्म हुआ, रात न आई  
हिस्से में मिरे ख्वाबों की सौग़ात न आई।

मौसम ही पे हम करते रहे तब्सरा<sup>१</sup> तादेर<sup>२</sup>  
दिल जिससे दुखे ऐसी कोई बात न आई।

यूँ डोर को हम वक्त की पकड़े तो हुए थे  
इक बार मगर छूटी तो फिर हाथ न आई।

हमराह<sup>३</sup> कोई और न आया तो गिला क्या  
परछाई भी जब मेरी मेरे साथ न आई।

हर सिम्त नज़र आती है बे-फ़स्ल ज़मीने  
इमसाल<sup>४</sup> भी इस शहर में वरसात न आई।

1. टिप्पणी
2. देर तक
3. साथ
4. इस साल।

## ग़ज़ल—२

अजीब सानिहा<sup>१</sup> मुझ पर गुज़र गया यारो  
मैं अपने साये से कल रात डर गया यारो ।

हर एक नक्श तमन्ना का हो गया धुँधला  
हर एक ज़ख्म मेरे दिल का भर गया यारो ।

भटक रही थी जो किश्ती वो ग़र्कें-आब<sup>२</sup> हुई  
चढ़ा हुआ था जो दरिया उतर गया यारो ।

वो कौन था, कहाँ का था, क्या हुआ था उसे  
सुना है आज कोई शख्स मर गया यारो ।

मैं जिसको लिखने के अरमान में जिया अब तक  
वरक्-वरक् वो फ़साना बिखर गया यारो ।

१. दुर्घटना

२. पानी में ढूँद गई ।

## मंजूर हाशमी

पैदाइश — 1938 — बदायूँ (यू.पी.)  
मृत्यु — 2008 — अलीगढ़ (यू.पी.)  
कृति — जानकारी उपलब्ध नहीं है।

मंजूर हाशमी ने अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से पोस्ट ग्रेजुएशन किया। इससे पहले मंजूर हाशमी ने अपनी तालीम हल्दवानी और अलीगढ़ में पूरी की। वे मौलाना आज़ाद लाइब्रेरी में डिप्टी लाइब्रेरियन की हैसियत से रिटायर हुए।

## मंजूर हाशमी की ग़ज़लें—1

सर पर थी कड़ी धूप वस इतना ही नहीं था  
उस शहर के पेड़ों में तो साया ही नहीं था।

पानी में ज़रा देर को हलचल तो हुई थी।  
फिर यूँ था कि जैसे कोई झूबा ही नहीं था।

लिक्खे थे सफ़र पाँव में किस तरह ठहरते  
और ये भी कि तुमने तो पुकारा ही नहीं था।

अपनी ही निगाहों पे भरोसा ना रहेगा  
तुम इतना बदल जाओगे सोचा ही नहीं था।

कंदा<sup>1</sup> थे ज़ेहन पे क्यूँ उसके ख़द-ओ-ख़ाल<sup>2</sup>  
चेहरा जो मिरी आँख ने देखा ही नहीं था।

1. उभर हुए / बने हुए

2. श़क्ल।

## ग़ज़ल—२

बदन को ज़ख्म करें खाक को लबादा करें  
जुनूं की भूली हुई रस्म का इआदा<sup>१</sup> करें।

तमाम अगले ज़मानों को ये इजाज़त है  
हमारे अहद<sup>२</sup>-ए-गुज़िश्ता का इस्तिफ़ादा<sup>३</sup> करें।

उन्हें अगर मेरी वहशत को आज़माना है  
ज़मीन को सख्त करें दश्त को कुशादा करें।

चलो लहू भी चराग़ों की नज़र कर देंगे  
ये शर्त है कि वो फिर रौशनी ज़्यादा करें।

सुना है सच्ची हो नियत तो राह खुलती है  
चलो सफ़र न करें कम-से-कम इरादा करें।

1. दोहराना
2. गुज़रा ज़माना
3. फायदा उठाना।

## निदा फ़ाज़ली

पैदाइश — 12 अक्टूबर, 1938 — ग्वालियर (म.प्र.)  
कृति — मुलाकातें, मोरनाच, हमक़दम, सफ़र में धूप तो होगी।

पूरा नाम मुक्तिदा हसन 'निदा फ़ाज़ली'

निदा एक कश्मीरी परिवार में पैदा हुए। स्कूली पढ़ाई ग्वालियर में हुई। पिता उर्दू के शायर थे और सिंधिया स्टेट में रेलवे के बड़े अफ़सर थे। देश विभाजन के बाद परिवार पाकिस्तान चला गया वे खुद भारत में ही रहे।

सन् 1964 में नौकरी की तलाश में बंबई पहुँचे और वहाँ के होकर रह गए।

'रज़िया सुल्तान' फ़िल्म के गीतकार जानिसार अख्तर के सन् 1983 में नहीं रहने पर कमाल अमरोही ने फ़िल्म के दो गाने निदा फ़ाज़ली से लिखवाए। टी.वी. सीरियल सैलाब, नीम का पेड़, जाने क्या बात हुई और ज्योति का टाइटल गीत लिखा। उन्होंने 24 किताबें, उर्दू हिंदी और गुजराती में लिखीं—इनमें से कुछ पाठ्य पुस्तक के रूप में महाराष्ट्र में मान्य हुई। उन्हें 'मीर तळी मीर अवॉर्ड' उनकी किताब 'दीवारों के बीच' पर मध्यप्रदेश शासन ने प्रदान किया। उन्हें 1998 में साहित्य अकादमी अवॉर्ड से भी नवाज़ा गया।

## निदा फ़ाज़ुली की ग़ज़लें—1

दीवारों दर से उतर कर परछाइयाँ बोलती हैं  
कोई नहीं बोलता जब तनहाइयाँ बोलती हैं।

परदेस के रास्ते में लुटते कहाँ है मुसाफ़िर  
हर पेड़ कहता है क़िस्सा पुरवाइयाँ बोलती हैं।

मौसम कहाँ मानता है तहज़ीब की बांदिशों को  
जिस्मों से बाहर निकल के अंगड़ाइयाँ बोलती हैं।

सुनने की मोहल्लत मिले तो आवाज़ है पत्थरों में  
उज़ड़ी हुई बस्तियों में आबादियाँ बोलती हैं।

## ग़ज़ल—२

दुनिया जिसे कहते हैं जादू का खिलौना है  
मिल जाए तो मिट्ठी है खो जाए तो सोना है।

अच्छा-सा कोई मौसम तनहा-सा कोई आलम  
हर वक़्त का रोना तो बेकार का रोना है।

बरसात का बादल तो दीवाना है क्या जाने  
किस राह से बचना है किस छत को भिगोना है।

ग़म हो कि खुशी दोनों कुछ देर के साथी हैं।  
फिर रास्ता ही रास्ता है हँसना है ना रोना है।

## ‘नदीम’ अजमेरी

पेदाइश — 2 फरवरी, 1940

नदीम अजमेरी सा: का पूरा नाम मुहम्मद ज़हीरुद्दीन कुरेशी है—पिता जनाब मुहम्मद फरीदुद्दीन कुरेशी थे। नदीम सा: ने राजस्थान यूनिवर्सिटी से अंग्रेज़ी साहित्य में बी.ए., बनारस यूनीवर्सिटी से हिंदी में बी.ए. तथा अलीगढ़ यूनिवर्सिटी से उर्दू में बी.ए. किया। गंधर्व विद्यालय, बंबई से (वोकल) म्यूज़िक में इंटर किया। रेल्वे में मुलाज़मत की।

सन् 1960 में अजमेर से हिंदी कवि के रूप में शुरुआत की। बाद में नाना जनाब बशीरुद्दीन मंसूरी की बदौलत उर्दू में लिखना शुरू किया। कादंबिनी, सरिता, शमा, बीसवीं सदी आदि पत्रिकाओं में आपकी लिखी रचनाएं शाया हुई।

सन् 1972-73 में ‘किताबों के सलीब पर’ से आलमी शोहरत पाई। रेडियो देहली के ‘हवा महल’ कार्यक्रम में आपका मज़ाहिया ड्रामा ‘पागल कौन नहीं होता है’ प्रस्तुत किया गया।

आपने फ़िल्मों में भी गाने लिखे और फिर स्क्रिप्ट राइटिंग भी की—फ़िल्में थीं ‘हर बादे में आपके साथ’, ‘यगाना’ और ‘आक थू’।

आपके दो रिकार्डेंड एलबम भी आ चुके हैं।

आजकल ये ‘इरफ़ाने उल तरीक़त’ नाम से एक किताब लिखने में व्यस्त हैं।

## नदीम अजमेरी की ग़ज़लें—१

अश्क है पलकों पे ऐसे में अगर आएगी शाम  
हर तरफ़ शमए ही शमए हैं किधर जाएगी शाम ।

धान के खेतों तक आकर जब ठहर जाएगी शाम  
गाँव की अल्हड़ सी दोशीज़ा नज़र आएगी शाम ।

ज़्यव्व के तेशे<sup>१</sup> से जू-ए-शीर<sup>२</sup> ला सकता हूँ मैं  
कोहे<sup>३</sup> ग़म लेकर जो आई तो पछताएगी शाम ।

इूब जाएंगे तेरे ग़म के उजाले जिस घड़ी  
फिर तड़प कर कुल्ज़मे<sup>४</sup> दिल में समा जाएगी शाम ।

क़त्ल का इलज़ाम दिन पर आएगा या रातपर  
सुरमई दागे<sup>५</sup>-रसन पर जबके मर जाएगी शाम ।

मुवह तक अफ़सानए शबनम सुना तो ऐ ‘नदीम’  
दामने गुल में अनोखी नग़हतें पाएगी शाम ।

1. बमूला
2. दृध की नदी
3. ग़म का पताड़
4. नाल सागर
5. फासी का फंदा ।

## ग़ज़्जल—२

तुझसे हज़ार दूर हूँ फिर भी मेरे कर्गि हैं तू  
मेरी रो ह्यात में जाने मकां मकीं हैं तू।

देख तसव्वुरात ने फ़ासले सब मिटा दिए  
आईनाए ख्याल आज बहुत हसीं है तू।

मेरी नमाज़े इश्क़ भी तेरा ही ज़िक्रे हुस्न है  
सजदागरे नमाज़ में नूरे तरेबगीं है तू।

ज़ज़्बाए शौके दीद ने आईना पेश कर दिया  
राजे फ़िराक़ खुल गया मुझसे जुदां नहीं है तू।

राहे वफ़ा में हमनशीं साथ रहेंगे उम्र भर  
में तेरा आसमान हूँ और मेरी ज़मीं है तू।

तू ने दिया 'नदीम' को भर के यो जामे वेखुदी  
झूम के कुर्ब ने कहा बादाए अंगर्वां है तू।

## વસીમ બરેલવી

પૈદાઇશ — 8 ફરવરી, 1940 — બરેલી (યૂ.પી.)  
કૃતિ — તવસ્સુમે ગ્રમ — 1966  
                  આંસૂ મેરે દામન તેરા — 1990  
                  મિજાજ — 1990  
                  આંખ આંસૂ હુઈ — 2000  
                  મેરા ક્યા — 2000  
                  આંખોં આંખોં રહે — 2007  
                  મૌસમ અંદર બાહર કે — 2007।

વસીમ બરેલવી ને 1958 મેં આગરા વિશ્વવિદ્યાલય સે એમ.એ. ઉર્ડુ લિટરેચર મં કિયા। અસિસ્ટેંટ પ્રોફેસર કે પદ સે શુરુઆત કી ફિર હૈડ ઓફ ડિપાર્ટમેન્ટ ઓફ ઉર્ડુ બરેલી વિશ્વવિદ્યાલય રહે। ઉનકી ગુજરાતી કો કર્ડ ગાયકોં ને ગાયા હૈ।

ફિલહાલ વે વાઇસ ચેઅરમેન, નેશનલ કાઉંસિલ ફોર ઉર્ડુ લૈગ્વેજ, મિનીસ્ટ્રી ઓફ હયૂમન રિસોર્સેજ ડેવલપમેન્ટ હૈને।

## वसीम बरेलवी की ग़ज़लें—१

ये हैं तो सबके लिए हो ये ज़िद हमारी है  
इस एक बात पे दुनिया से जंग जारी है।

उड़ान वालो उड़ानों पे वक़्त भारी है  
परों की अब के नहीं हौसलों की बारी है।

मैं क़तरा हो के भी तूफ़ाँ से जंग लेता हूँ  
मुझे बचाना समुंदर की ज़िम्मेदारी है।

हर इक साँस पे पहरा है बेयकीनी का  
ये ज़िंदगी तो नहीं मौत की सवारी है।

दुआ करो कि सलामत रहे मिगे डिम्मत  
ये इक चराग कई आँधियों पे भारी है।

## ग़ज़ल—२

वो मेरे घर नहीं आता मैं उसके घर नहीं जाता  
मगर इन एतिहातों से ताल्लुक मर नहीं जाता ।

बुरे अच्छे हों जैसे भी हों सब रिश्ते यहीं के हैं  
किसी को साथ दुनिया से कोई लेकर नहीं जाता ।

खुले थे शहर में सौ दर मगर इक हद के अंदर ही  
कहाँ जाता अगर मैं लौटकर फिर घर नहीं जाता ।

मुहब्बत के ये आँसू हैं उन्हें आँखों में रहने दो  
शरीफों के घरों का मसला बाहर नहीं जाता ।

‘वसीम’ उससे कहो दुनिया बहुत महदूद है मेरी  
किसी दर का जो हो फिर दर-दर नहीं जाता ।

## मैराज फैज़ा बादी

पैदाइश — 1941 — फैज़ाबाद (यू.पी.)

मृत्यु — 3 नवम्बर, 2013 — लखनऊ (यू.पी.)

कृति — नामुस

इनका पूरा नाम सैयद मैराजुल हक्क था। वे लखनऊ में वस गए थे। वे उत्तर प्रदेश वक़्फ़ बोर्ड से संबंधित रहे।

## मैराज फैज़ाबादी की ग़ज़लें—1

वेर्खाव साइतों का परस्तार कौन है  
इतनी उदास रात में वेदार कौन है।

किसको ये फ़िक्र कि क़बीले को क्या हुआ  
सब इस पे लड़ रहे हैं कि सरदार कौन है।

दीवार पर सजा तो दिए बागियों के सिर  
अब ये भी देख लो कि पसे दीवार कौन है।

सब कश्तियाँ जला के चले साहिलों से हम  
अब तुम से क्या बताएं के उस पार कौन है।

ये फ़ैसला तो शायद वक़्त भी न कर सके  
सच कौन बोलता है अदाकार कौन है।

## ग़ज़ल—2

बढ़ गया था प्यास का एहसास दरिया देख कर  
हम पलट आए मगर पानी को प्यासा देख कर।

हम भी हैं शायद किसी भटकी हुई क़श्ती के लोग  
चीखने लगते हैं ख़बाबों में जज़ीरा देखकर।

जिसकी जितनी हैसियत है उसके नाम उतना खुलूस  
भीख देते हैं यहाँ के लोग कासा देखकर।

माँगते हैं भीख अब अपने मुहल्लों में फ़कीर  
भूख भी मोहताज हो जाती है ख़तरा देखकर।

खुदकशी लिखी थी एक बेवा के चेहरे पर मगर  
फिर वो ज़िंदा हो गई बच्चा बिलखता देखकर।

## मुमताज़ राशिद

पैदाइश — 10 जून, 1944

उर्दू अदब से पहचान मोनिआ इस्लामिया, अजमेर में आठवीं जमात में पढ़ते हुई। सन् 1965 में बंबई चले गए। इनकी लिखी ग़ज़लें तमाम गायकों ने गाई हैं। वे 'बोर्ड ऑफ स्टडीज़ इन उर्दू', मुंबई यूनिवर्सिटी के मेम्बर हैं।

उनकी किताब 'भीगा हुआ काग़ज़' को महाराष्ट्र स्टेट  
उर्दू एकाडेमी द्वारा नवाज़ा गया।

## मुमताज़ राशिद की ग़ज़लें—१

घर छोड़ के भी ज़िंदगी हैरानियों में है  
शहरों का शोर दश्त की वीरानियों में है।

कितना कहा था उससे के दामन समेट ले  
अब वो भी मेरे साथ परेशानियों में है।

लहरों में ढूँढ़ता हूँ मैं खोए हुए नागिन  
चेहरों का अक्स बहते हुए पानियों में है।

डरता हूँ ये भी वक्त के हाथों से मिट न जाए  
हल्की सी जो चमक अभी पेशानियों में है।

## ग़ज़्ल—२

पत्थर सुलग रहे थे कोई नक्शे पा न था  
हम उस तरफ चले थे जिधर रास्ता न था।

परछाईयों के शहर की तन्हाईयाँ न पूछ  
अपना शरीके ग़म कोई अपने सिवा न था।

यूँ देखती है गुमशुदा लम्हों के मोड़ से  
इस ज़िंदगी से जैसे कोई वास्ता न था।

चेहरों पे जम गई थीं ख्यालों की उलझनें  
लफ़ज़ों की जुस्तजू में कोई बोलता न था।

खुरशीद क्या उभरते दिल की तहों से हम  
इस अंजुमन में कोई शहर आश्ना न था।

## अमीर क़ज़्लबाश

पैदाइश — 1948  
मृत्यु — 2003  
कृति — बाज़ग़श्त — 1974  
इनकार — 1976  
शिकायतें मेरी — 1979

पूरा नाम अमीर आग़ा क़ज़्लबाश था।

## अमीर क़ज़्लबाश की ग़ज़्लें—१

मेरे जुनूं का नतीजा ज़रूर निकलेगा  
इसी सियाह समुंदर से नूर निकलेगा।

गिरा दिया है तो साहिल पे इंतज़ार न कर  
अगर वो ढूब गया है तो दूर निकलेगा।

उसी का शहर, वही मुद्रई, वही मुंसिफ़  
हमें यकीं था हमारा कुसूर निकलेगा।

यकीं न आए तो एक बार पूछ कर देख  
जो हँस रहा है वो ज़ख्मों से चूर निकलेगा।

## गुज़्रल—2

उनकी बेरुखी में भी इल्लिफ़ात<sup>1</sup> शामिल है  
आज कल मेरी हालत देखने के क़ाबिल है।

क़ल्ल हो तो मेरा सा मौत हो तो मेरी सी  
मेरे सोग़वारों<sup>2</sup> में आज मेरा क़ातिल है।

हर क़दम पे नाकामी<sup>3</sup> हर क़दम पे महरुमी<sup>4</sup>  
ग़ालिबन कोई दुश्मन दोस्तों में शामिल है।

मुज़तरिब हैं मौजें क्यूँ उठ रहे हैं तूफ़ान क्यूँ  
क्या किसी सफ़ीने को आरजूए साहिल है।

सिर्फ़ रहज़न ही से क्यूँ ‘अमीर’ शिकवा हो  
मंज़िलों की राहों में रहवर भी हाईल है।

1. दया
2. मौत पर गेने वाले
3. असफलता
4. कमी ।

## राहत इंदौरी

पैदाइश — 1 जनवरी, 1950 — इंदौर (म.प्र.)

इनके पिता रफअत उल्लाह एक कपड़ा मिल में मज़दूर थे। शिक्षा नूतन स्कूल इंदौर में हुई जहाँ से इन्होंने हायर सैकेंड्री परीक्षा पास की। इस्लामिया करीमियाँ कॉलेज इंदौर से ग्रेजुएशन किया सन् 1973 में और वरकत उल्ला यूनिवर्सिटी से 1975 में एम.ए. उर्दू साहित्य में किया। राहत इंदौरी को 1985 में भोज विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. मिली विषय था—‘उर्दू में मुशायरा’।

19 वर्ष की उम्र में पहला शेर पढ़ा। इन्होंने कई फ़िल्मों के गाने लिखे हैं—जैसे सर, जनम, खुदूदार, मर्डर, मुन्नाभाई MBBS, मिशन कश्मीर आदि।

## राहत इंदौरी की ग़ज़लें—1

लोग हर मोड़ पे रुक-रुक के संभलते क्यूँ हैं  
इतना डरते हैं तो फिर घर से निकलते क्यूँ हैं।

मैं न जुगनू हूँ दिया हूँ ना कोई तारा हूँ।  
रौशनी वाले मेरे नाम से जलते क्यूँ हैं।

नींद से मेरा ताल्लुक ही नहीं बरसों से  
ख़बाब आ आ के मेरी छत पे टहलते क्यूँ हैं।

मोड़ होता है जवानी का संभलने के लिए  
और सब लोग यहीं आके फिसलते क्यूँ हैं।

## ग़ज़्ल—२

मस्जिदों के सहन तक जाना वहुत दुश्वार था  
देर से निकला तो मेरे रास्ते में दार था।

अपने ही फैलाव के नशे में खोया था दरख़्त  
और हर मासूम टहनी पर फलों का बार था।

देखते ही देखते शहरों की रौनक बन गया  
के यही चेहरा था जो हर आईने पे बार था।

सब के दुःख सुख उसके चेहरे पे लिखे पाए गए  
आदमी क्या था हमारे शहर का अख़बार था।

अब मोहल्ले भर के दरवाज़ों पे दस्तक है नसीब  
इक ज़माना था के जब मैं भी वहुत खुदार था।

काग़ज़ों की सब सियाहियां बारिशों में धुल गई  
हम ने जो सोचा तेरे बारे में सब बेकार था।

## मुनव्वर राना

पैदाइश — 26 नवम्बर, 1952 — रायबरेली (यू.पी.)

रायबरेली (यू.पी.) के रहने वाले थे—ज्यादा वक़्त कलकत्ते में गुज़रा। पार्टीशन के वक़्त उनके सभी रिश्तेदार पाकिस्तान चले गए, पर उनके पिता भारत में ही रहे। उनकी रचनाएं हिंदी, उर्दू, बंगला और गुरुमुखी में छपीं। उनकी रचनाओं में ‘माँ’ की अलग अहमियत है।

उन्हें कई अवार्ड्स से नवाज़ा गया—जैसे डॉ. ज़ाकिर हुसैन अवॉर्ड 2005 नई देहली, साहित्य एकेडेमी अवॉर्ड फॉर उर्दू लिटरेचर 2014 आदि। आप लखनऊ में रिहाइश करते हैं।

## मुनव्वर राना की ग़ज़लें—१

दोहरा रहा हूँ बात पुरानी कही हुई  
तस्वीर तेरे घर में थी मेरी लगी हुई।

इन बदनसीब आँखों ने देखी है बार-बार  
दीवार में ग़रीब की ख़्वाहिश चुनी हुई।

जब तक है डोर हाथ में तब तक का खेल है  
देखी तो होंगी तुम ने पतंगे कटी हुई।

ये ज़ख्म का निशान है जाएगा देर से  
छुटती नहीं है जल्दी से मेहंदी लगी हुई।

## ग़ज़्ल—२

मुख्तसर होते हुए भी ज़िंदगी बढ़ जाएगी  
माँ की आँखें चूम लीजे रौशनी बढ़ जाएगी।

मौत का आना तो तय है मौत आएगी मगर  
आपके आने से थोड़ी ज़िंदगी बढ़ जाएगी।

इतनी चाहत से ना देखा कीजिए महफ़िल में आप  
शहर वालों से हमारी दुश्मनी बढ़ जाएगी।

आपके हँसने से ख़तरा और भी बढ़ जाएगा  
इस तरह तो और आँखों की नमी बढ़ जाएगी।

बेवफ़ाई खेल का हिस्सा है जाने दे इसे  
तज़किरा उससे ना कर शरमिंदगी बढ़ जाएगी।

## अबरार अहमद

पैदाइश — 6 फरवरी, 1954 — जरनवाला (पाकिस्तान)  
कृति — आखिरी दिन से पहले — 1997 (नज़्मे)  
ग़फ़्लत के बराबर — 2007 (ग़ज़लें)

अबरार अहमद पेशे से डॉक्टर हैं, उनकी शायरी मशहूर रिसालों में छपती रही है। वे 'मुंतख़ब शायरी' के एडीटर भी हैं। वे कालम भी लिखते हैं तमाम अखबारों के लिए जैसे—दहैराल्ड, करांची, द न्यूज़ ऑन संडे, लाहौर।

## अबरार अहमद की गुज़लें—1

ज़मीं नहीं ये मेरी, आसमा<sup>1</sup> नहीं मेरा  
मताए<sup>1</sup>-ख्वाब बजुज<sup>2</sup> कुछ यहाँ नहीं मेरा।

ये ऊँट और किसी के हैं दश्त मेरा है  
सवार मेरे नहीं सारवाँ<sup>3</sup> नहीं मेरा।

मैं हो गया हूँ खुद अपने सफ़र से बेग़ाना  
कि नींद मेरी है ख्वाब-ए-रवाँ<sup>4</sup> नहीं मेरा।

तो आब<sup>5</sup>-ओ-ख़ाक से बचकर किधर को जाता मैं  
दवामे<sup>6</sup>-वस्ल है बाक़ी निशाँ नहीं मेरा।

फिर एक दिन उसी मिट्ठी को लौट जाऊँगा।  
गुरेज तुझसे राहे-रफ़तगाँ नहीं मेरा।

सदाए शहरे गुज़िश्ता अभी बुलाती है  
गो अब अज़ीज़ कोई भी वहाँ नहीं मेरा।

1. सपनों की दौलत
2. सिवा
3. ऊँट चाला
4. बहता सपना
5. पानी मिट्ठी
6. अनंत मिलन।

## ग़ज़ल—२

हमने रखा था जिसे अपनी कहानी में कहीं  
अब वो तेहरीर है औराके<sup>१</sup>-ख़िज़ानी में कहीं।

बस ये इक सायते<sup>२</sup>-हिज़ां है कि जाती ही नहीं  
कोई ठहरा भी है इस आलमे फ़ानी में कहीं।

जितना सामान भी इकट्ठा किया इस घर के लिए  
भूल जायेंगे उसे नक़ले<sup>३</sup>-मकानी में कहीं।

खैर औरों का तो क्या ज़िक्र कि अब लगता है  
तू भी शामिल है मेरे रंजे<sup>४</sup>-ज़मानी में कही।

चश्मे<sup>५</sup>-नमनाक को इस दरजा हिक्कारत से न देख  
तुझको मिल जाना है इक दिन इसी पानी में कहीं।

मरक़जे<sup>६</sup> जां तो वही तू है मगर तेरे सिवा  
लोग हैं और भी इस याद पुरानी में कहीं।

१. पतझड़ के काग़ज़
२. अलग होने का वक़्त
३. घर बदलने में
४. ज़माने के दुख
५. गीली आँख
६. जान का कन्दू।

## बिस्मिल रतलामी

पैदाइश - तारीख मालमू नहीं है।  
मृत्यु - कुछ साल पहले ही हुई है।

बिस्मिल साः के एक शेर में ही आपको उनका पूरा परिचय मिल जाएगा।

मुद्रदतों गौहर की सूरत परवरिश पाया हूँ मैं  
वक्त की गहरी नदी से झूबकर उभरा हूँ मैं।

ये उनकी उस ग़ज़ल का मतला है, जिसकी बिना पर उन्हें एक उस्ताद शायर की याद में गोल्ड मैडल से नवाज़ा गया था भोपाल में।

## बिस्मिल रतलामी की ग़ज़लें—१

ख़त पे हमने चंद पानी की लकीरें खेंच दी  
भूली विसरी इक कहानी की लकीरें खेंच दी।

चश्मे गिरियाँ से निकल कर चेहरए हस्ती पे आज  
आँसुओं ने कामरानी<sup>१</sup> की लकीरें खेंच दी।

चेहरए हस्ती पे हैं ये झुर्रियाँ या वक्त ने  
आइने पर चंद पानी की लकीरें खेंच दी।

काफ़ला सालार की शफ़्फ़ाफ़<sup>२</sup> पेशानी पे आज  
गर्देरह ने काम रानी की लकीरें खेंच दी।

उनके रु-ए मुँफईल<sup>३</sup> पर है रवाँ तूफाने अश्क़  
किसने ये पानी पे पानी की लकीरें खेंच दी।

ज़ीस्त<sup>४</sup> के तपते हुए सहरा में रोया है कोई  
या ज़मीं पर तुमने पानी की लकीरें खेंच दी।

देख कर हाथों को अपने सोचता रहता हूँ मैं  
इनमें किसने ज़िंदगानी की लकीरें खेंच दी।

१. सफलता
२. स्वच्छ/पानी
३. लज़िज़त
४. जीवन।

## ग़ज़ल—२

रहनुमाओं की ख़बर पायें चलो लौट चलें  
क़ाफ़िले वालों से मिल जाएं चलो लौट चलें।

ये कहाँ ले के चले आये हो यारों मुझको  
इससे पहले के बो याद आएं चलो लौट चलें।

छुप गया ले के शुआओं<sup>१</sup> की सलीबें<sup>२</sup> सूरज  
ज़ीस्त को अब कहाँ ले जाएं चलो लौट चलें।

हाँ बो ही शहर है ये शहर मगर आज यहाँ  
कौन है जिसके बहाँ जाएं चलो लौट चलें।

नक़शे हस्ती के तज़्सुस<sup>३</sup> में कहीं ‘ए बिस्मिल’  
खुद भी गुमराह न हो जाएं चलो लौट-चलें।

1. किरणों

2. क्रॉस

3. खोज।

## सहर अफ़ग़ानी

पैदाइश — तारीख मालूम नहीं है।

जनाब सहर सा: को रतलाम (म.प्र.) में रहते हुए सुनने का मौका मिला, अपने घर पर। कहते हैं वे 'सबा अफ़ग़ानी' मशहूर शायर के भतीजे हैं।

उनकी छोटी बहर की ग़ज़लें बहुत मुतास्सर कर जाती हैं। अपने पुरअसर अंदाज़े वयाँ से वे नाशिस्तों की जान हुआ करते हैं।

## सहर अफ़ग़ानी की ग़ज़लें—१

शिकस्ता जाम लेकर जी रहे हैं  
दिले नाकाम लेकर जी रहे हैं।

कहाँ अपना मुक़द्रदर और उजाले  
हुजूमे शाम लेकर जी रहे हैं।

हमीं तो हैं वफ़ादारी मुहब्बत  
हर इक इल्ज़ाम लेकर जी रहे हैं

सहारा है यही इक ज़िंदगी का  
तुम्हारा नाम लेकर जी रहे हैं

‘सहर’ ये ज़िंदगी भी ज़िंदगी है  
ख़्याले ख़ाम लेकर जी रहे हैं।

## ग़ज़ल—२

बेरुदी है रही रही न रही  
आरिज़ी है रही रही न रही।

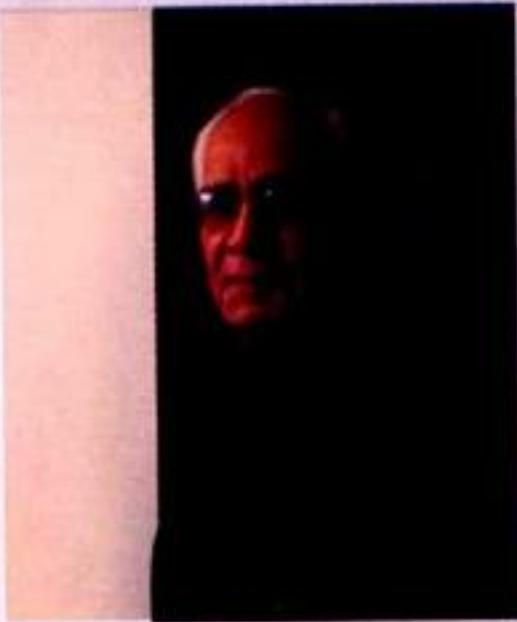
ये अंधोरे बड़े मुनासिब हैं  
रोशनी है रही रही न रही।

उनके वादों का ऐतबार तो है  
जिंदगी है रही रही न रही।

आज जुल्फ़ों की छाँव है और कल  
बरहमी है रही रही न रही।

ऐ 'सहर' ग़म ही जावेदां हो जाए  
नग़मगीं है रही रह न रही।

1. धांडी कर रहने वाली
2. नाग़ज़ी
3. हमेशा रहने वाले।



संग्रहकर्ता : एस.सी. चतुर्वेदी

जन्म : कोटा (राजस्थान)

शिक्षा : एम.ए., एल.एल.बी.

बरसों प्रशासनिक सेवा के दौरान काम करते हुए भी उदू अदब से लगाव बना रहा। नामी शुआरा हज़रात को सुनने का मौका मिला और कई मुशायरों में सदारत का फर्ज़ भी निभाया तो पसंदीदा ग़ज़लें और अशआर आपसे आप डायरी में कैद कर लिए गए जो पाठकों तक पहुँचने को बेताब हैं। फिलहाल ये सिलसिला जारी है और इंशाअल्लाह जब तक शुआरा अपनी कलम चलाते रहेंगे, यूँ ही चलता रहेगा।

₹275/-



ISBN 81-8129-645-1

## नमन प्रकाशन

4231/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002

दूरभाष : 23247003, 23254306

9 788181 296450